यूको संगम

प्रधान कार्यालय की त्रैमासिक ई-पत्रिका

वर्ष - 1; अंक 3

अक्टूबर -दिसंबर, 2021

यूको बैंक UCO BANK
(भारत सरकार का उपक्रम) (A Govt. of India Undertaking)
सम्मान आपके विश्वास का Honours Your Trust

संरक्षण एवं प्रेरणा

अतुल कुमार गोयल
एमडी एवं सीईओ

अजय व्यास
कार्यपालक निदेशक

इशराक अली खान
कार्यपालक निदेशक

दिग्दर्शन

नरेश कुमार
महाप्रबंधक
मा.सं.प्र., का.से., प्रशिक्षण एवं राजभाषा

संपादक

अमलशेखर करणसेठ
मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं प्रभारी

सहयोग

सत्येन्द्र कुमार शर्मा
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

रोशनी सरकार साव
वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)

राम अभिषेक तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)

अनुक्रम

विषय-वस्तु	पृष्ठ सं.
संपादकीय	3
वित्तीय समावेशन : अतीत, वर्तमान और भविष्य श्री शक्तिकान्त दास, गवर्नर, आरबीआई	4-8
बैंकिंग आलेख	9
बैंकिंग वार्ता	10-11
सफलता की कहानी	12-13
माह के स्वतंत्रता सेनानी	14
तिमाही के हिन्दी साहित्यकार	15-16
तिमाही के हिन्दीतर साहित्यकार	17-19
राष्ट्रीय संगोष्ठी	20-22
आलेख: क्रिसमस	23-25
आजादी का अमृत महोत्सव: काव्य संगोष्ठी	26
राजभाषा सम्मेलन : डिब्रूगढ़	27-28
एमडी एवं सीईओ सर का डिब्रूगढ़ दौरा	29
डिब्रूगढ़ की समीक्षा बैठक में एमडी सर का संबोधन	30-33
हिन्दी मेला	34-35
स्वास्थ्यनामा	36-37
विदाई	38-41
प्रेरक प्रसंग	42-43

प्रकाशन एवं संपर्क
यूको बैंक, राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, 10, बीटीएम सरणी, कोलकाता - 700001
ई-मेल horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in, फोन - 033 4455 7384

संपादकीय

प्रिय सुधीजन ,

यूको संगम ई-पत्रिका का तीसरा अंक आपके सामने प्रस्तुत है। मुझे पूरा विश्वास है कि दूसरे अंकों की तरह यह अंक भी आपके मन को भाएगा। इस पत्रिका का मूल उद्देश्य अपने बैंक में तिमाही के दौरान सम्पन्न गतिविधियों से अवगत कराने के साथ-साथ आपको अन्य बातों की जानकारी देनी भी है।

प्रस्तुत अंक में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा वाराणसी में 13 एवं 14 नवंबर, 2021 को अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में आयोजित प्रदर्शनी का उद्‌घाटन माननीय **श्री** अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार ने माननीय श्री योगी आदित्यनाथ, मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश की उपस्थिती में यूको बैंक के राजभाषा स्टॉल पर दीप प्रज्ज्वलित करके किया। माननीय श्री अमित शाह, गृह एवं सहकारिता मंत्री द्वारा यूको बैंक के स्टाल का उद्‌घाटन करना अत्यंत गौरव की बात है। माननीय श्री अमित शाह जी के भाषण का लिंक भी इस ई-पत्रिका में दिया गया है।

इसीप्रकार 18 दिसंबर को पूर्व एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा डिब्रूगढ़ में आयोजित राजभाषा सम्मेलन की झलक भी आपको लिंक सहित देखने को मिलेगी।

इस अंक में बैंकिंग आलेख के साथ-साथ श्री शक्तिकांत दास, गवर्नर, भारतीय रिजर्व बैंक का संभाषण भी आपको इस पत्रिका में मिलेगा। माह के साहित्यकारों के अंतर्गत दो हिन्दी साहित्यकारों तथा ओड़िया, गुजराती एवं नेपाली के प्रसिद्ध साहित्यकारों एवं तिमाही के स्वतंत्रता सेनानी श्री उधम सिंह के जीवन का संक्षिप्त परिचय वीडियो लिंक सहित पेश किया किया गया है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी वीडियो के रूप में इस पत्रिका में समाहित की गई है जो कि एक नवीन प्रयास है। हमें आशा है कि यह अंक आपको पसंद आएगा|

यह पत्रिका डिजिटल है। इसमें दिए गए वीडियो चिह्न पर आप क्लिक करेंगे तो आप संबंधित वीडियो देख पाएंगे। ऑडियो चिह्न पर क्लिक करने से आप उसे देख सकते हैं।

पत्रिका में किया गया यह प्रयोग एक अभिनव प्रयास है। हमें पूरा विश्वास है कि यह पत्रिका हमारे पाठकों को काफी अच्छी लगेगी। पत्रिका के बारे में अपनी प्रतिक्रिया/टिप्पणी मेल से दें।

अमलशेखर करणसेठ
मुख्य प्रबंधक-राजभाषा एवं प्रभारी

वित्तीय समावेशन : अतीत, वर्तमान और भविष्य

- शक्तिकांत दास
गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक

(गुरुवार, 15 जुलाई 2021 को इकनॉमिक टाइम्स फाइनेंशियल इनक्लूजन समिट में दिया गया उद्घाटन वक्तव्य)

इस गरिमापूर्ण सम्मेलन को संबोधित करने हेतु मुझे आमंत्रित करने के लिए मैं इकनॉमिक टाइम्स फाइनेंशियल इनक्लूजन समिट के आयोजकों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। वित्तीय समावेशन सतत और संतुलित आर्थिक विकास का एक प्रमुख प्रेरक तत्व है जो आय की असमानता और गरीबी को कम करने में सहायता प्रदान करता है। यद्यपि हमने इस क्षेत्र में पिछले कुछ वर्षों मे जबरदस्त प्रगति की है, परंतु महामारी के कारण नई चुनौतियां और जटिलताएं पैदा हो गई है। हमारी अर्थव्यवस्था में हो रहे सुधार की आकांक्षाओं और आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वित्तीय प्रणाली की महत्वपूर्ण भूमिका होगी। इसलिए यह सर्वथा उपयुक्त है कि इस समय वित्तीय समावेशन पर विचार-विमर्श करने के लिए एक सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है और मैं इसके लिए आयोजकों की सराहना करता हूँ।

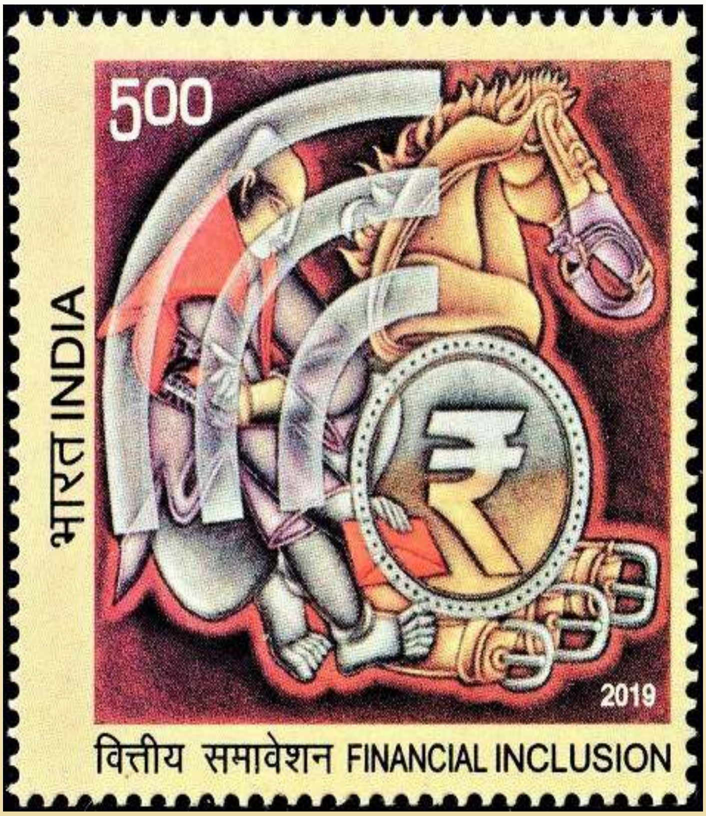

2. वित्तीय समावेशन की दिशा में भारत की यात्रा के पीछे जो सबसे अधिक प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण सिद्धांत है, वह गांधीवादी दर्शन
“अंत्योदय के माध्यम से सर्वोदय - सबसे कमजोर व्यक्ति के उत्थान के माध्यम से सभी लोगों का कल्याण" में प्रतिध्वनित होता है। 'समावेशी' और 'समानता' के मूल उद्देश्य इस दर्शन के केंद्र में है जिसका दायरा गरीबी उन्मूलन से आगे तक जाता है। इसके दायरे में गरीबों, महिलाओं, किसानों, छोटे उद्यमों और अन्य लोगों के साथ-साथ समाज के सभी वर्गों के लिए अवसर की समानता सुनिश्चित करना शामिल है। भारत में नीति निर्माताओं के रूप में भारत सरकार और भारतीय रिज़र्व बैंक ने वित्तीय समावेशन के महत्व को बहुत पहले स्वीकार कर लिया था और यह सुनिश्चित करने के लिए कई उपाय किए गए हैं कि आर्थिक विकास का लाभ समाज के गरीब और वंचित वर्गों तक पहुंचे।

3. मुझे विश्वास है कि आज इस मंच पर उभरते जोखिमों, नवोन्मेषी और अति परिवर्तनकारी प्रौद्योगिकियों के नए मॉडलों और संभावित नीतिगत हस्तक्षेपों के क्षेत्रों पर विचार-विमर्श किया जाएगा। आज के अपने संबोधन में इस बात पर विचार करना मुझे उपयुक्त लगा कि हमने वित्तीय समावेशन के रास्ते पर अब तक कितनी दूर यात्रा कर ली है और आगे के रास्ते पर सोच-विचार किया जाए। पहुँच, उपयोग और गुणवत्ता के आयामों में इस क्षेत्र में हुई प्रगति का आकलन करते हुए यह देखा गया है कि भारत में बैंकिंग सेवाओं तक समाज के अंतिम व्यक्ति की पहुंच को सुविधाजनक बनाने और

आज़ादी का अमृत महोत्सव

वित्तीय उत्पादों के उपयोग को बढ़ाने की दिशा में एक लंबा सफर तय किया गया है।

इसे आगे बढ़ाते हुए वित्तीय समावेशन के लिए राष्ट्रीय रणनीति 2019-2024 (एनएसएफई) और वित्तीय शिक्षण के लिए राष्ट्रीय रणनीति 2020-2025 (एनएसएफई) वित्तीय समावेशन, वित्तीय साक्षरता और उपभोक्ता संरक्षण की दिशा में समन्वित दृष्टिकोण अपनाने के लिए एक रोडमैप प्रदान करती हैं। वित्तीय समावेशन के लिए राष्ट्रीय रणनीति दस्तावेज में ऐसे कई मील के पत्थर और कार्यान्वित की जाने वाली कार्य योजनाओं को तय किया गया है जिससे एक बहु-हितधारक दृष्टिकोण के माध्यम से समावेशी विकास को प्रोत्साहित करने के लिए सुरक्षित और पारदर्शी तरीके से वित्तीय सेवाओं को सभी नागरिकों के लिए उपलब्ध, सुलभ और सस्ती बनाया जा सके।

अब तक की प्रगति

4. यदि पीछे मुड़कर देखा जाए तो देश की वित्तीय समावेशन यात्रा 1950 के दशक में शुरू हो गई थी, जब अर्थव्यवस्था के उपेक्षित क्षेत्रों और आबादी के कमजोर वर्गों को ऋण देने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। इसके बाद के वर्षों में विभिन्न प्रकार की पहल की गई जिनमें अन्य तमाम योजनाओं के अलावा शाखा नेटवर्क का विस्तार, प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्र ऋण (पीएसएल), अग्रणी बैंक योजना शुरू करना स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी), संयुक्त देयता समूहों (जेएलजी) को बढ़ावा देना, कारोबार प्रतिनिधि (बीसी) मॉडल का कार्यान्वयन आदि शामिल हैं। बीसी मॉडल की सहायता से पारंपरिक बैंकिंग शाखाओं ने देश भर में बैंकिंग प्रणाली की पहुंच में सुधार किया है। हाल के वर्षों में वित्तीय समावेशन के प्रसार और पहुंच में वास्तव में बहुत तेज वृद्धि हुई है।

5. प्रौद्योगिकी के विकास और इसे अपनाने से डिजिटल वित्तीय सेवाओं के सघन विस्तार में व्यापक सुधार हुआ है। जन-धन, आधार और मोबाइल (जेएएम) से निर्मित परिदृश्य में वित्तीय समावेशन के संपूर्ण क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव लाया है। इसके अलावा एक सुविधाजनक, सुरक्षित, निरापद और किफायती तरीके से डिजिटल भुगतान को सर्वव्यापी बनाने के लिए जमीनी स्तर पर सक्षम डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर की संरचना बनाने के लिए अनेक पहल की गई है। पिरामिड के बुनियादी हिस्से के मूल्यगत उपयोग की अंतर्निहित संभावना को देखते हुए, पारंपरिक बैंकों से लेकर भुगतान बैंको, छोटे वित्त बैंको, सूक्ष्म वित्त संस्थानों (एमएफआई) तथा संभावनाशील फिनटेक कंपनियों जैसी नई प्रकार की विशिष्ट वित्तीय संस्थाओं को इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में उभरते भागीदारों के रूप में देखा गया है।

6. वित्तीय समावेशन के लिए एक योजनाबद्ध और सुव्यवस्थित दृष्टिकोण रखने के लिए भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों को वित्तीय समावेशन योजनाएं (एफआईपी) बनाने की सलाह दी गई है, जिसमे कई मापदंडों के अनुसार उपलब्धिया शामिल हैं। इन मापदंडों के संबंध में पर्याप्त प्रगति हुई है, जिसका विवरण मई 2021 में जारी रिजर्व बैंक की वार्षिक रिपोर्ट में दिया गया है।

7. अब उपभोक्ता संरक्षण और ग्राहकों की क्षमता बढ़ाने पर ध्यान देते हुए अर्थव्यवस्था और आबादी के कमजोर वर्गों की समस्याओं को दूर करने पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है, ताकि वित्तीय सेवाओं के जिम्मेदार और स्थायी उपयोग के स्तर को प्राप्त किया जा सके। विभिन्न जनसंख्या समूहों की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने वाले विभिन्न प्रकार के बैंकों की शुरूआत उस दिशा में एक कदम था। हाल के दिनों में, जिन चुनौतियों ने हमारा ध्यान आकर्षित किया है वे है (i) ग्राहक की पहचान कैसे करे (ii) अंतिम पायदान तक कैसे पहुंचे; और (iii) प्रासंगिक उत्पाद कैसे प्रदान करें जो विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, किफायती और सुरक्षित हो।

8. विश्वस्तरीय भुगतान प्रणाली के साथ, डिजिटल आईडी (आधार) और मोबाइल फोन के प्रसार से, पहुंच और उपयोग की पहली दो चुनौतियों का समाधान काफी हद तक हो गया है। तीसरी चुनौती अर्थात् गुणवत्ता के लिए मांग और पूर्ति दोनों पक्षों में आवश्यक हस्तक्षेप करने की

आवश्यकता है। प्रधानमंत्री जन धन योजना (पीएमजेडीवाई) में खोले गए खातों ने वित्तीय सेवाओं तक लाखों भारतीयों की पहुंच को संभव बना दिया है जिससे उनकी मूलभूत वित्तीय उत्पादों की विविध आवश्यकताएं पूरी हो रही है। इससे आपूर्ति से जुड़ी समस्या को काफी हद तक हल कर लिया गया है।

मांग से संबंधित पक्ष में हस्तक्षेप जनता के बीच जागरूकता पैदा करने पर केंद्रित है। वित्तीय समावेशन को सतत आगे बढ़ाने के लिए वित्तीय साक्षरता, ग्राहक सुरक्षा और शिकायत निवारण इसके केंद्र में रखा गया है। वित्तीय साक्षरता में सुधार की दिशा में हाल में दो पहल की गई हैं- नियामकों द्वारा राष्ट्रीय वित्तीय शिक्षा केंद्र (एनसीएफई) की स्थापना और भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा वित्तीय साक्षरता केंद्र (सीएफएल) परियोजना का कार्यान्वयन।

9. भुगतान प्रणालियों को किसी भी अर्थव्यवस्था की जीवन -रेखा के रूप में देखा जाता है। वित्तीय समावेशन को हासिल करने और आर्थिक लाभ को पिरामिड के निचले भाग तक पहुंचाना सुनिश्चित करने के एक साधन के रूप में उनकी पहचान बढ़ती जा रही है। यह अब सबको भली-भांति ज्ञात हो चुका है कि भारत विश्व के उन अग्रणी देशों में शामिल हैं जिनके पास अत्याधुनिक भुगतान संबंधी बुनियादी ढांचे और उत्पाद है, जिससे डिजिटल भुगतान को व्यापक रूप से अपनाया जा सके। उदाहरण के लिए, प्रीपेड पेमेंट इंस्ट्रूमेंट्स (पीपीआई) की संख्या में 53 प्रतिशत की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (सीएजीआर) से वृद्धि हुई है और यह मई 2017 में रहे 41 करोड़ से बढ़कर मई 2021 में 226 करोड़ हो गई। इन प्रवृत्तियों से संकेत मिलता है कि ऐसे उपकरण छोटे मूल्य भुगतान लिए बेहद लोकप्रिय हुए है।

10. तत्काल भुगतान सेवा (आईएमपीएस) और एकीकृत भुगतान इंटरफेस (यूपीआई) जैसी त्वरित भुगतान प्रणालियों की शुरुआत से डिजिटल भुगतान में और तेजी आयी क्योंकि ये लाभार्थियों को तत्काल क्रेडिट प्रदान करती है और चौबीसो घंटे उपलब्ध है। डिजिटल पहुंच की सीमा का जून 2021 के दौरान औसतन प्रत्येक दिन भारत में भुगतान प्रणाली से लगभग 4.5 लाख करोड़ रुपये प्रतिदिन की राशि के 15 करोड़ से अधिक लेनदेन किए गए। भारत के भुगतान परिदृश्य में स्मार्टफोन के यूपीआई प्लेटफॉर्म माध्यम से दी जा रही भुगतान लेनदेन की सुविधा ने क्रांति ला दी है। जून 2021 में यूपीआई से 280 करोड़ से अधिक लेनदेन किए गए। विश्व स्तर पर, यूपीआई के प्रति अच्छा रुझान देखा गया है। इसी प्रकार आधार सक्षम भुगतान सेवाएं (एईपीएस), आधार प्रमाणीकरण के उपयोग से माइक्रो-एटीएम और बीसी के माध्यम से निधि अंतरण/ भुगतान और नकद निकासी की सुविधा प्रदान करती है। महामारी के दौरान, माइक्रो-एटीएम के माध्यम से बीसी आउटलेट्स पर नकद लेनदेन में उल्लेखनीय बढ़त देखी गई, जिसमें वर्ष 2020-21 के दौरान 2.25 लाख करोड़ रुपये के 94 करोड़ से अधिक लेनदेन हुए।

महामारी से निपटने के उपाय

11. भारत में महामारी की दूसरी लहर ने जीवन और आजीविका दोनों को गंभीर रूप से प्रभावित किया है। वर्ष 2020-21 की दूसरी छमाही में शुरू हुई बहाली अप्रैल-मई 2021 में महामारी की दूसरी लहर से प्रभावित हुई। वित्तीय समावेशन की दिशा में हमारे प्रयासों ने सरकार के प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (डीबीटी) द्वारा कमजोर वर्गों को निर्बाध और समय पर वित्तीय सहायता प्रदान करने में मदद की है।

12. जेएएम ट्रिनिटी के घटकों में से एक महत्वपूर्ण घटक- आधार, विश्व की सबसे बड़ी पहल है जो बायोमेट्रिक पहचान प्रदान करती है। इसने अभिनव डिजिटल प्लेटफॉर्म द्वारा वित्तीय समावेशन की सुविधा प्रदान की है। एनएसीएच -आधार पेमेंट ब्रिज (एपीबी) प्रणाली और पीएमजेडीवाई ने मिलकर उपलब्ध बैंकिंग सुविधाओं के प्रभावी उपयोग को सक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो महामारी के दौरान सामने आई थी। क्योंकि इनके माध्यम से प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना के अंतर्गत इन खातों में नकद लाभ दिए गए। आज की तारीख में लगभग 42.59 करोड़ पीएमजेडीवाई खाताधारक है जिनमें 55 प्रतिशत से अधिक खाताधारक महिलाएं हैं। डीबीटी में डिजिटल भुगतान के प्रभाव का अंदाजा इससे लगाया जा सकता है कि वर्ष 2020-21 के दौरान 5.53 लाख करोड़ रुपये का डिजिटल अंतरण 54 मंत्रालयों की 319 सरकारी योजनाओं के लिए

किया गया।

13. कोविड-19 से संबंधित व्यवधानों के वित्तीय प्रभाव को कम करने के लिए रिजर्व बैंक ने जरूरतमद वर्गों को ऋण प्रवाह की लागत सस्ती करने के लिए कई नीतिगत उपाय किए हैं। इन उपायों में नीति दर को कम करना, मांग के अनुसार चलनिधि योजनाओं की शुरूआत और अखिल भारतीय वित्तीय संस्थानों के माध्यम से चलनिधि का सुव्यवस्थित उपयोग सुनिश्चित करना तथा वित्तीय संस्थानों को व्यक्तियों, छोटे व्यवसायों और एमएसएमई के तनावग्रस्त ऋणों को हल करना शामिल हैं। नए एमएसएमई उधारकर्ताओं के लिए क्रेडिट संवितरण पर नकद आरक्षित अनुपात (सीआरआर) छूट; एनबीएफसी को ऑन-लेंडिंग के लिए बैंक ऋण हेतु पीएसएल वर्गीकरण और ऑन लेडिंग के लिए लघु वित्त बैंकों (एसएफबी) से माइक्रो फाइनेंस संस्थानों (एमएफएल) को ऋण हेतु पीएसएल वर्गीकरण जैसे प्रभावित क्षेत्रों में ऋण प्रवाह को बढ़ावा देने के लिए अतिरिक्त उपाय किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, समावेशी विकास पर अधिक ध्यान देने के उद्देश्य से रिज़र्व बैंक ने पिछले वर्ष पीएसएल के दायरे को विस्तृत किया, जिसके तहत (क) स्टार्टअप को शामिल किया गया, (ख) अक्षय ऊर्जा क्षेत्र को उधार देने की सीमा में वृद्धि की गई (ग) छोटे और सीमांत किसानों और कमजोर वर्गों के लिए निर्धारित लक्ष्यों को बढ़ाया गया और (घ) बैंकों को अपेक्षाकृत कमतर ऋण व्यापन वाले जिलों में ऋण प्रवाह बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

14. महामारी ने, डिजिटल भुगतानों की अधिक व्यापक स्वीकार्यता के साथ-साथ, डिजिटलीकरण की गति को तीव्रतर कर दिया है। यह आवश्यक है कि वृहत्तर डिजिटलीकरण को वित्तीय समावेशन के लक्ष्यों में समामेलित करने के लिए कदम उठाए जाएँ। भुगतान अवसंरचना विकास निधि (पीआईडीएफ) का परिचालन- बैंकों और कार्ड नेटवर्कों के साथ आरबीआई की एक पहल टियर 3 से 6 केन्द्रों और पूर्वोत्तर राज्यों में भुगतान स्वीकृति अवसंरचना के विकास के लिए आवश्यक गति प्रदान करेगा। यह इन अनछुए इलाकों में इलेक्ट्रॉनिक भुगतान स्वीकृति सुविधाओं (उदाहरण के लिए पॉइंट ऑफ सेल डिवाइस) के अधिकाधिक संस्थापन को सुगम बनाएगा और इस प्रकार डिजिटल भुगतान व्यवस्था की पहुंच और अधिक बढ़ेगी।

15. इसी प्रकार, प्रत्येक राज्य/संघ शासित प्रदेश में कम से कम एक जिले को शत प्रतिशत डिजिटली सक्षम बनाने हेतु, 2019 में 42 जिलों में बैंको के साथ मिलकर आरंभ की गई रिजर्व बैंक की अग्रणी परियोजना, आम आदमी द्वारा डिजिटल भुगतानों की अधिकाधिक पहुँच और उपयोग को सुगम बनाएगी। मार्च 2021 तक बैंकों ने व्यक्तियों के मामले में 95.9 प्रतिशत और कारोबारों के मामले में 89.8 प्रतिशत डिजिटल कवरेज हासिल कर ली है। एसएलबीसी को निर्देश दिये गए हैं कि इन चिन्हित जिलों में डिजिटल प्रगति की निरंतरता सुनिश्चित करने के लिए नए फोकस और बल के साथ कार्य करें। इसके अलावा, एनएसएफआई के अंतर्गत 'वित्तीय सेवाओं तक सर्वव्यापी पहुँच' को प्रोत्साहित करने के लिए, पहाड़ी इलाकों में 5 किमी के दायरे/500 परिवारों वाले 99.9 प्रतिशत लक्षित गाँवों में बैंकिंग आउटलेट के किसी न किसी रूप की पहुँच प्रदान की गई है।

16. विभिन्न सार्वजनिक स्थानों पर लोगों के इकट्ठा होने पर लगाए गए महामारी सबंधी प्रतिबंधों मे परंपरागत वित्तीय साक्षरता शिविरों पर भी पुनर्विचार करने की आवश्यकता पैदा कर दी है। महामारी के दौरान, वित्तीय शिक्षण के प्रसार को जारी रखने के लिए पूरे देश में वैकल्पिक उपायों यथा- सोशल मीडिया, मास मीडिया (स्थानीय टीवी चैनल और रेडियो सहित) का रास्ता तेजी से अपनाया गया।

महामारी के बाद की दुनिया: आगे की राह

17. महामारी के बाद रिकवरी को अधिक समावेशी और सतत बनाए रखने के लिए, वित्तीय समावेशन हमारी नीतिगत प्राथमिकता बना रहेगा। अंतिम मील तक की दूरी पाटने में माइक्रोफाइनान्स की अनुपूरक भूमिका को देखते हुए, माइक्रोफाइनान्स क्षेत्र में विभिन्न विनियमित

उधारदाताओं के लिए विनियामक फ्रेमवर्कों को सुसंगत बनाने के वास्ते हाल ही में एक परामर्शी दस्तावेज जारी किया गया है। इसका प्राथमिक उद्देश्य माइक्रोफाइनान्स उधारकर्ताओं की अति-ऋणग्रस्तता से संबंधित चिंताओं को दूर करना; ब्याज दरों को औचित्यपूर्ण बनाने के लिए बाजार प्रणाली को सक्षम बनाना; और ऋण लागत की पारदर्शिता को बढ़ाकर सुविचारित निर्णय लेने के लिए उधारकर्ताओं को सशक्त बनाना है।

18. पूरे देश में मार्च, 2024 तक प्रखण्ड स्तर पर सेंटर फॉर फाइनांशियल लिटरेसी (सीएफएल) प्रोजेक्ट के पहुँच जाने से आशा है कि वृहत्तर वित्तीय साक्षरता के लिए सामुदायिक नेतृत्व वाले सहभागी दृष्टिकोण की प्रभावोत्पादकता बढ़ेगी। साथ ही, वित्तीय साक्षरता की अवधारणाओं को कम उम्र में ही मन में बैठा लेने के महत्व को पहचानते हुए, स्कूली बच्चों के पाठ्यक्रम में वित्तीय साक्षरता सामग्री को समाहित करना- वित्तीय शिक्षण हेतु राष्ट्रीय कार्यनीति 2020-25 (एनएसएफई) के रणनीतिक लक्ष्यों में से एक है। अब तक 15 राज्यों के शैक्षणिक बोर्डों ने अपने स्कूली पाठ्यक्रम में वित्तीय साक्षरता मॉड्यूल शामिल किए हैं। ऐसी अपेक्षा है कि ये सारे दृष्टिकोण जमीनी स्तर पर वित्तीय शिक्षण को मजबूत करेंगे, जिससे एनएसएफई द्वारा प्रतिपादित वित्तीय रूप से जागरूक और सशक भारत के निर्माण का स्वप्न साकार हो सकेगा।

19. देश में वित्तीय समावेशन का दायरा मापने के लिए एक 'वित्तीय समावेशन सूचकांक' (एफआई इंडेक्स) बनाने और एक निश्चित अंतराल पर प्रकाशित करने का निर्णय लिया गया है। इस सूचकांक में वित्तीय समावेशन के तीन आयामों के लिए मानदंड होंगे- पहुँच, उपयोग और गुणवत्ता। एफआई इंडेक्स पर काम चल रहा है और आरबीआई द्वारा शीघ्र ही इसे प्रकाशित किया जाएगा।

निष्कर्ष

20. चूंकि मैं अपनी बात समाप्त कर रहा हूँ, मैं यह बात दोहराना चाहता हूँ कि वित्तीय समावेशन समावेशी सवृद्धि को बढ़ावा देता है क्योंकि इससे पिरामिड के निचले स्तर तक ऋण और अन्य सुरक्षा उपायों समेत वित्तीय सेवाएँ उपलब्ध हो पाती हैं। अतीत में मिली सीख और कोविड-19 महामारी के दौरान अर्जित अनुभव स्पष्ट रूप से इंगित करते हैं कि वित्तीय समावेशन और समावेशी संवृद्धि, वित्तीय स्थिरता को सुदृढ़ करते हैं। सुदृढ उपभोक्ता सुरक्षा प्रणालियों के साथ, वृहत्तर वित्तीय साक्षरता और शिक्षण यह सुनिश्चित करेंगे कि पिरामिड के निचले स्तर तक के लोग सुविचारित वित्तीय निर्णय लेने में सशक्त हुए हैं। यह बैंकों, एनबीएफसी, एमएफआई आदि को भी अपने ग्राहक-आधार और उत्पाद को बढ़ाने और अपने तुलनपत्र को विस्तृत करने में सक्षम बनाएगा।

21. मैं इस बात पर बल देना चाहता हूँ कि सबके समृद्ध भविष्य के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु वृहत्तर वित्तीय समावेशन के हमारे प्रयासों को अनिवार्यतः जारी रखा जाए। बैंक खातों की सर्वव्यापी पहुँच और इसके साथ-साथ ऋण, निवेश, बीमा और पेंशन से संबंधित वित्तीय उत्पादों तक सुलभ पहुँच को और अधिक तेजी से बढ़ाने की जरूरत है। यह सुनिश्चित करना सभी हितधारकों का दायित्व है कि वित्तीय पारिस्थिति की (डिजिटल माध्यम सहित) समावेशी हो और उत्पादों की अनुचित बिक्री, साइबर सुरक्षा, डेटा निजता जैसे जोखिमों का समाधान करने तथा समुचित वित्तीय शिक्षण और जागरूकता के जरिये वित्तीय व्यवस्था में भरोसा बढ़ाने में सक्षम हो। इन समस्त प्रयासों को एक सुदृढ शिकायत निवारण प्रणाली से समर्थित भी करना होगा। मैं आशा करता हूँ कि इस फोरम से रोचक विचार आएंगे, जिनसे देश में वित्तीय समावेशन की प्रक्रिया को और गति मिलेगी।

बैंक उत्पादों के प्रचार-प्रसार में हिंदी भाषा का महत्व

भाग्यश्री नीलम भारती
प्रबंधक
खुदरा ऋण केन्द्र
अंचल कार्यालय, जयपुर

वित्तीय व्यवसाय सामान्य जन से जुड़ा है। पिछले दो दशकों में बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों का स्वरूप काफी बदल गया है। घंटों कतार में खड़े रहने वाला थका देने वाला माहौल आज बीती बात हो गई है। आज तकनीक चाहे जितना भी आधुनिक हो जाए, नये-नये आयामों को प्राप्त कर ले, फिर भी मूल इकाई तो वही रहेगी। जिसकी मदद से हमें लक्ष्यों को पाना है, कारोबार को बढ़ाना है, वह है - ग्राहक यानी उपभोक्ता, हिंदी भाषी क्षेत्र का एक आम आदमी, जो हिंदी ही जानता है, हिंदी ही समझता है हिंदी ही बोलता है। बैंकिंग सेवा क्षेत्र में हिन्दी के प्रयोग से बहुसंख्यक हिन्दी भाषी समाज का बैंकों के प्रति आत्मविश्वास बढ़ेगा। हिन्दी के प्रयोग से बैंकिंग कारोबार में जनता को सुविधा मिलेगी। सुदूर गांव में रहनेवाले लोग अंग्रेजी आम तौर पर नहीं जानते। लिहाजा उनकी बोल-चाल की सामान्य भाषा हिंदी ही होती है।

अगर हम भारत सरकार की नीतियों की बात करें, तो हम देखेंगे कि ज्यादातर नीतियां ग्रामीण क्षेत्र के विकास और निचले स्तर के लोगों को ऊपर उठाने के लिए हैं। अत: हम हिंदी का प्रयोग करके ज्यादा से ज्यादा लोगों के साथ ज्यादा अच्छे सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं और अपने बैंकिंग व्यवसाय को बढ़ा सकते हैं। आज बैंकिंग व अन्य वित्तीय व्यवसाय में प्रतिस्पर्धा है, चुनौती है, आगे बढ़ने की होड़ है। क्षेत्र विस्तृत ही होता जा रहा है तो ऐसे में तो हिंदी का महत्व और भी बढ़ जाता है। आज हम पूरे बैंकिंग क्षेत्र में डिजिटलीकरण की तरफ अग्रसर हैं, अतः जो भी तकनीक आम आदमी से जुड़ी है, उसमें असीम वृद्धि की गुंजाइश है, और ऐसी ही सरकार एवं बैंक की अपेक्षा भी है। हमारी अर्थव्यवस्था उठान पर है, इसलिए तकनीक का प्रयोग करने वालों की संख्या में आश्चर्यजनक बढ़ोतरी हुई है। यह बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में हिंदी को महत्व देने और उसके प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देने के कारण ही है।

अतः बदलते वित्तीय परिवेश में हिंदी को जितना अधिक लोगों के बीच लाएंगे, उन्हें हर बात हिंदी में ही समझाएंगे, तभी वह हमारे साथ मन से जुड़ पाएंगे। वे आपके कार्य व्यवहार की प्रशंसा करेंगे, आपकी योजनाओं की चर्चा करेंगे और इस तरह दूसरे लोगों को भी आपसे जोड़ते चले जाएंगे। इस बात से बैंकिंग ही नहीं, बल्कि पूरे वित्तीय क्षेत्र में हिंदी के महत्व का पता चलता है। हिंदी जानना, बोलना और लिखना पिछड़ेपन की निशानी नहीं, अपितु यह तो हमारी गरिमामयी राष्ट्रीय अभिव्यक्ति है। हिंदी राष्ट्रीय गौरव और अस्मिता का प्रतीक ही नहीं, भारत की आत्मा की आवाज़ है। जब हिंदी का बैंकिंग व अन्य वित्तीय संस्थानों में भरपूर प्रयोग होगा, लोगों को अपनी भाषा में योजनाओं की जानकारी मिलेगी, उनका लाभ उठा कर वे अपने कारोबार को बढ़ाएंगे तो पूरा देश प्रगति के रास्ते पर गतिमान होगा।

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा लोकपाल प्रणाली लागू किए जाने के परिणामस्वरूप गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों की परिवाद निवारण प्रणाली में सुधार आएगा

भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा बैंकों और बैंकेतर भुगतान प्रणाली के सहभागियों के लिए आंतरिक लोकपाल योजना की ही भांति उसी प्रकार की वित्त कंपनियों के लिए आंतरिक लोकपाल योजना (IOS) लागू किए जाने के परिणामस्वरूप उच्चतर ग्राहक अंतरापृष्ठ रखने वाली गैर-बैंकिंग वितीय कंपनियों (NBFCs) में परिवाद निवारण प्रणालियाँ लागू किये जाने के कार्य को सहारा प्राप्त होगा। गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों अब अपनी मौजूदा निवारण प्रणालियों के अतिरिक्त सेवा में कमियों से संबन्धित शिकायतों की जांच करने के लिए लोकपाल नियुक्त करेंगी। कई एक गैर-बैंकिंग वितीय कंपनियों द्वारा ग्राहकों के एक व्यापक वर्णक्रम को अपने वित्तीय उत्पादों एवं सेवाओं की शीघ्र सुपुर्दगी सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल विधियाँ अपनाए जाने के फलस्वरूप इस मुहिम को वर्धित महत्व प्राप्त हो जाता है।

भारतीय रिजर्व बैंक के चौथे सैंडबाक्स में वित्तीय धोखाधड़ियों की रोकथाम पर संकेन्द्रण

विनियामक सैंडबाक्स ढांचे के अधीन भारतीय रिजर्व बैंक के चौथे जत्ये (cohort) के तहत वित्तीय धोखाधड़ियों की रोकथाम और उनके न्यूनीकरण पर ध्यान केन्द्रित रखा जाएगा। भारतीय रिजर्व बैंक का कहना है कि ध्यान का केंद्र धोखाधड़ी नियंत्रण ढांचे को सुदृढ़ करते हुये धोखाधड़यों की घटना होने और उनका पता लगाने के बीच होने वाले विलंब पर होगा तथा धोखाधड़ियों पर कार्रवाई होने में लगने वाले समय को कम करने पर होगा। इसके अलावा, द्रुत गति से विकसित हो रहे फिंटेक परिदृश्य से सामंजस्य बिठाने और निरंतर नवोन्मेष एवं संलग्नता सुनिश्चित करने के एक प्रयास में भारतीय रिजर्व बैंक इसके पूर्व बंद किए गए सहगणों (cohorns) की विषय-वस्तुओं के लिए सदा-सुलभ अनुप्रयोगों की सुविधा भी उपलब्ध कराएगा।

भारतीय रिजर्व बैंक ऑफ़लाइन विधि में खुदरा डिजिटल भुगतानों के लिए देशव्यापी ढांचे की शुरुआत करेगा

भारतीय रिजर्व बैंक शीघ्र ही अल्प इन्टरनेट संयोजकता वाले क्षेत्रों में डिजिटल भुगतानों के प्रसार क्षेत्र को बढ़ाने तथा उसके अंगीकरण को विस्तारित करने के उद्देश्य से ऑफ़लाइन विधि में खुदरा डिजिटल भुगतान के लिए एक नये ढांचे की शुरुआत करने वाला है। इसके अतिरिक्त, शीर्ष बैंक ने तुरंत भुगतान सेवा (IMPS) के लिए दैनिक लेनदेन सीमा को 2 लाख रुपए से बढ़ाकर 5 लाख रुपए करते हुये देश के डिजिटल भुगतान पारिस्थिति की तंत्र को बढ़ावा प्रदान किया है।

5 करोड़ रुपए से कम के एक्सपोजर हेतु चालू खाता खोलने के नियमों को आसान बनाया गया

भारतीय रिजर्व बैंक ने 5 करोड़ रुपए से कम के बैंकिंग प्रणाली के एक्सपोजर वाले चालू खाते खोलने के कुछेक नियमों को शिथिल करते हुये छोटे आकार वाली फर्मों को राहत प्रदान की है। बैंकों से उधारकर्ताओं से इस आशय का एक वचनपत्र लेने हेतु कहा गया है कि वे प्राप्त की गई ऋण सुविधाओं के 5 करोड़ रुपये तक या उससे अधिक हो जाने पर ऋणदाताओं को सूचित करेंगे। जहां तक 5 करोड़ रुपए या उससे अधिक के बैंकिंग प्रणाली के एक्सपोजर वाले उधारकर्ताओं का संबंध है, जिन बैंकों से उन्होंने नकद ऋण/ओवरड्राफ्ट सुविधा प्राप्त कर रखी है उनमें से किसी भी बैंक के पास चालू खाता रख सकते हैं। ऐसे बैंकों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे बैंकिंग प्रणाली के एक्सपोजर का 10% उस उधारकर्ता के प्रति रखें। अन्य ऋणदाता बैंक केवल वसूली खाते खोल सकते हैं, वह भी इस शर्त पर कि ऐसे खातों में जमा की गई निधियों उनके प्राप्त होने के दो कार्य दिवसों के भीतर नकद ऋण/ओवरड्राफ्ट खाते में विप्रेषित कर दी जाएँ।

मृत जमाकर्ता के परिवार के लिए स्वर्ण योजना से समय-पूर्व आहरण की अनुमति: भारतीय रिजर्व बैंक

भारतीय रिजर्व बैंक ने स्वर्ण मुद्रीकरण योजना के तहत मूल जमाकर्ता की मृत्यु हो जाने की स्थिति में अवरुद्धता अवधि (lock-in period) के पहले जमाराशियों के समय पूर्व आहरण की अनुमति दे दी है। तीन वर्षों की अवरुद्धता अवधि वाली मध्यम अवधि स्वर्ण जमा (MTGD) योजना के मामले में जमाराशियों के छः माह के भीतर आहरित कर लिए जाने पर किसी प्रकार के व्याज का भुगतान नहीं किया जाएगा 5 वर्षों की अवरुद्धता अवधि वाली तथा लागू होने वाली ब्याज दर के 2.5% होने पर दीर्घावधिक स्वर्ण जमा (LTGD) योजना के मामले में राशि जमा किए जाने के एक वर्ष के भीतर आहरण के लिए किसी प्रकार के ब्याज का भुगतान नहीं किया जाएगा। मध्यम अवधि स्वर्ण जमा और दीर्घ अवधि स्वर्ण जमाराशियां क्रमश: 5 से 7 वर्षों और 12 से 15 वर्षों तक जारी रहती है। अतएव, अवरुद्धता अवधि के बाद जमाराशियों के आहारित कर लिए जाने के बावजूद वे समय पूर्व आहरण हो जाएंगी।

एक नियुक्त कर्मी से नियोक्ता बनने का सफर

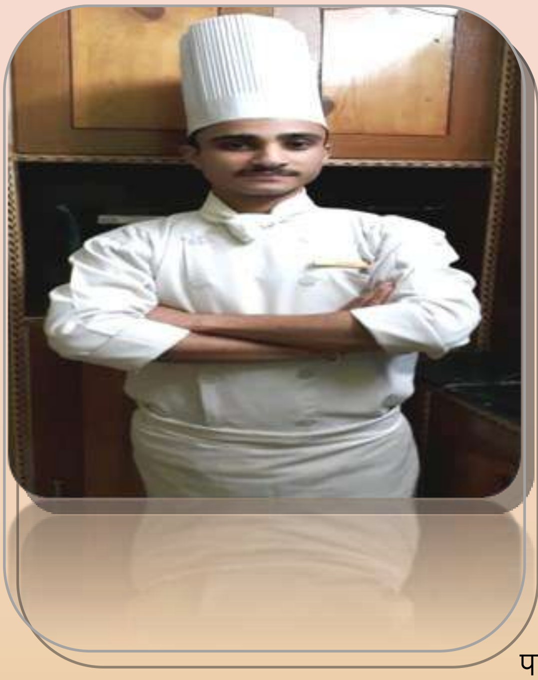

श्री दीपक कुमार एक उत्साही युवा है जो शिमला के रहने वाले है। उन्होंने अपने जीविका की शुरुआत वर्ष 2016 में होटल ओबेरॉय सीसिल शिमला में होटल प्रबन्धक प्रशिक्षु के तौर पर की थी। उन्होंने वहां दो वर्ष कार्य किया और होटल उद्योग के संबधित हर विषय की बारीकियों को सीखा। एक बेकरी शेफ के रूप में अपनी कार्य यात्रा के दौरान उन्हें एक कर्मचारी होने के नाते उपयोगी अनुभव प्राप्त हुआ। वर्ष 2019 में उन्हें ज्ञात हुआ कि उनके पिता जी एक गंभीर बीमारी से पीड़ित है, इस खबर ने उन्हे बेहद आहत एवं परेशान किया | अब दीपक एक ओर जहां पिता के इलाज के लिए दौड़भाग कर रहे थे, वहीं घर की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए हालात से जूझ रहे थे| इस अनपेक्षित हालात के बीच उन्हें अपनी नौकरी भी छोड़नी पड़ी। ऐसे विकट समय में जहां पूरे परिवार के भरण पोषण की जिम्मेदारी का भार उनके कंधों पर था, पर परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं थी।

जीवन सभी के लिए एक रोलर कोस्टर की सवारी के समान है और दीपक भी इस बात को जान रहे थे और व्यवस्था से भी दो चार हो रहे थे जीवन के इस कठिन दौर से जूझते हुए दीपक को आशा की एक किरण वर्ष 2019 के अंत में तब नज़र आई जब उन्हे देश में चल रही प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP) के बारे में पता चला और उसी समय इन्हें कार्यक्रम के विषय में और अधिक जानने के साथ-2 इससे प्रभावित होकर अपनी खुद की बेकरी इकाई स्थापित करने का विचार आया | विस्तार से जानने के लिए उन्होंने सर्वप्रथम खादी ग्रामोद्योग केंद्र का दौरा किया और इस योजना के विषय में यथावश्यक जानकारी एकत्र की। वहीं उन्हें इस विषय में पता चला कि किसी भी नव उधमी को अपनी इकाई स्थापित करने से पूर्व "उद्यमिता विकास प्रशिक्षण" आरएसईटीआई द्वारा प्रदान किया जाता है जिसमें इच्छुक व्यक्ति को उस उद्यम से संबन्धित यथावश्यक कार्य प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है |

सफलता की कहानी

आज़ादी का अमृत महोत्सव

मन में अपनी इकाई स्थापित के निर्णय लिए पूर्ण उत्साही मन से दीपक तुरंत यूको आरसेटी, शिमला में पंजीकृत हुए और उन्होंने अपना “उद्यमिता विकास प्रशिक्षण” सफलतापूर्वक पूरा किया और यूको आरएसईटीआई के इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें उद्यम स्थापित करने और कुशल प्रबंधन करने के विषय में व्यवहारिक जानकारी के साथ आवश्यक कौशल भी सीखा। यूको बैंक आरसेटी से प्रशिक्षण के पश्चात आत्मविश्वास से पूर्ण दीपक अब अपने सपने को अपनी आँखों के सामने हकीकत बनते देख रहे थे, बस जरूरत थी पहल करने की और इकाई स्थापित कर उसे मूर्त रूप देने की, जिसके लिए वह पूर्ण रूप से तैयार थे |

बेकरी इकाई शिमला शहर के उपनगर संजौली में स्थापित करने और वहाँ आवश्यक व्यवस्था करने के लिए एसबीआई संजौली शिमला द्वारा उन्हें 5 लाख रुपये की राशि से वित्त पोषण किया गया। वक्त के साथ धीरे -2 स्थापित इकाई में लोगों की भीड़ बढ़ने लगी और इस बेकरी की विवधता और अच्छी सेवाओं की चर्चा पूरे इलाके में होने लगी और दो वर्ष के लघु समय पश्चात आज मेसर्स डीसी बेकर्स संजौली शिमला नाम से यह बेकरी इकाई रु 15000 से रु. 20,000 की मासिक आय के साथ न केवल सफलतापूर्वक चल रही है अपितु अपनी विशिष्ट पहचान भी स्थापित कर रही है | वास्तव में कार्यप्रशिक्षण एवं बैंकिंग वित्तीय पोषण से दीपक को जहां अपनी बेकरी इकाई स्थापित करने में एक महत्वपूर्ण सहयोग मिला, वहीं अपने जुझारू व्यक्तित्व, कार्य अनुभव और विकट दिनों की सीख ने उन्हें एक सफल नव उधमी स्थापित किया है। आज दीपक जहां एक ओर अपनी इकाई में युवाओं को रोजगार प्रदान कर रहे है वहीं दूसरी ओर अन्य इच्छुक अभ्यर्थियों के लिए ऑनलाइन माध्यम से कुकरी क्लासेस भी प्रदान कर रहे हैं और ऑनलाइन सहायता के साथ-साथ बेकरी के प्रचार एवं प्रसार हेतु **“इट्स ऑल अबाउट बेकरी"** नाम से फेसबुक पेज भी चला रहे हैं, जहां आए दिन हजारों फेन फॉलोइंग उनके द्वारा बताई जा रही रेसेपी का लुत्फ उठा रहे हैं और कुकिंग विज्ञान में अपना ज्ञानवर्धन भी कर रहे हैं|

इस आशा के साथ कि मैसर्स डीसी बेकर्स जल्द ही शहर के अन्य स्थानों पर अपनी नई इकाई स्थापित करेगी इन शब्दों के साथ यूको बैंक आरसेटी (UCO Rseti) शिमला, दीपक और उनकी बेकरी इकाई की सफल यात्रा के लिए शुभकामनाएं देते हैं।

प्रस्तुति: यूको आरसेटी शिमला

उधम सिंह : एक परिचय

तिमाही के स्वतंत्र सेनानी

(26 दिसम्बर 1899 – 31 जुलाई 1940)

उधम सिंह भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के महान सेनानी एवं क्रान्तिकारी थे। उधम सिंह का **जन्म 26 दिसम्बर 1899** को पंजाब प्रांत के संगरूर जिले के सुनाम गाँव में एक सिख-कम्बोज परिवार में हुआ था। उत्तर भारतीय राज्य उत्तराखण्ड के एक जनपद का नाम भी इनके नाम पर उधम सिंह नगर रखा गया है।

उधम सिंह के बचपन का नाम शेर सिंह और उनके भाई का नाम मुक्ता सिंह था, जिन्हें अनाथालय में क्रमश: उधमसिंह और साधु सिंह के रूप में नए नाम मिले। इतिहासकार मालती मलिक के अनुसार उधमसिंह देश में सर्वधर्म समभाव के प्रतीक थे और इसीलिए उन्होंने अपना नाम बदलकर **'राम मोहम्मद सिंह आजाद'** रख लिया था जो भारत के तीन प्रमुख धर्मों का प्रतीक है।

1919 में उन्होंने अनाथालय छोड़ दिया और क्रांतिकारियों के साथ मिलकर आजादी की लड़ाई में शमिल हो गए। उधमसिंह अनाथ हो गए थे परंतु इसके बावजूद वह विचलित नहीं हुए और देश की आजादी तथा जनरल डायर को मारने की अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिए लगातार काम करते रहे।

उधम सिंह 13 अप्रैल 1919 को घटित जालियाँवाला बाग नरसंहार के प्रत्यक्षदर्शी थे। राजनीतिक कारणों से जलियाँवाला बाग में मारे गए लोगों की सही संख्या कभी सामने नहीं आ पाई। इस घटना से वीर उधम सिंह तिलमिला गए और उन्होंने जलियाँवाला बाग की मिट्टी हाथ में लेकर माइकल ओ'डायर को सबक सिखाने की प्रतिज्ञा ले ली। अपने इस ध्येय को अंजाम देने के लिए उधम सिंह ने विभिन्न नामों से अफ्रीका, नैरोबी, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। सन् 1934 में उधम सिंह लंदन पहुँचे और वहां 9, एल्डर स्ट्रीट कमर्शियल रोड पर भारत के यह वीर क्रांतिकारी, माइकल ओ'डायर को ठिकाने लगाने के लिए उचित वक्त का इंतजार करने लगे।

जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 13 मार्च 1940 को रायल सेंट्रल एशियन सोसायटी की लंदन के काक्सटन हाल में बैठक थी जहां माइकल ओ'डायर भी वक्ताओं में से एक था। उधम सिंह उस दिन समय से ही बैठक स्थल पर पहुँच गए। अपनी रिवॉल्वर उन्होंने एक मोटी किताब में छिपा ली। इसके लिए उन्होंने किताब के पृष्ठों को रिवॉल्वर के आकार में उस तरह से काट लिया था, जिससे डायर की जान लेने वाला हथियार आसानी से छिपाया जा सके। बैठक के बाद दीवार के पीछे से मोर्चा संभालते हुए उधम सिंह ने माइकल ओ'डायर पर गोलियां दाग दीं। दो गोलियां माइकल ओ'डायर को लगीं जिससे उसकी तत्काल मौत हो गई। उधम सिंह ने वहां से भागने की कोशिश नहीं की और अपनी गिरफ्तारी दे दी। उन पर मुकदमा चला। 4 जून 1940 को उधम सिंह को हत्या का दोषी ठहराया गया और **31 जुलाई 1940** को उन्हें पेंटनविले जेल में फांसी दे दी गई।

उधम सिंह की कहानी जानने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें

गजानन माधव मुक्तिबोध : एक परिचय

जन्म : 13 नवंबर 1917 **मृत्यु : 11 सितंबर 1964**

गजानन माधव मुक्तिबोध का जन्म **13 नवम्बर, 1917** को श्योपुर में माधवराव-पार्वती दंपत्ति के घर हुआ। मुक्तिबोध अस्तित्ववादी विचारधारा के समर्थक थे। वे हिन्दी साहित्य के प्रमुख कवि, आलोचक, निबंधकार, कहानीकार तथा उपन्यासकार थे। उन्हें प्रगतिशील कविता और नयी कविता के बीच का एक सेतु भी माना जाता है। 1962 में उनके द्वारा तैयार की गई पाठ्य पुस्तक '**भारत: इतिहास और संस्कृति**' को सरकार द्वारा प्रतिबंधित किए जाने से उनके मन को आघात लगा था।

47 साल की उनकी अल्पायु में उन्होंने जिस कठोर यथार्थ को भोगा उसकी अभिव्यक्ति 'फंतासी' या 'फ़ैंटेसी' के शिल्प में की है। **'अँधेरे में'** और **'ब्रह्मराक्षस'** सरीखी उनकी लंबी प्रसिद्ध कविताओं सहित अन्य कई कविताओं में कम-बेशी मात्रा में यही शिल्प उतरता हुआ नज़र आता है। हिंदी कविता में फ़ैंटेसी की पहचान मुक्तिबोध से ही होती है। यह फ़ैंटेसी कविता वातावरण के सृजन, वस्तुस्थिति के प्रत्यक्षीकरण, आत्मकथन, बिंब रचना, कर्ता के प्रवेश, काव्यवस्तु और काव्य-कर्ता के बीच संबंध निर्माण और अंतः क्रियाओं के सूत्रों का सृजन, कथ्य का उभार, प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से तय दिशा की ओर प्रस्थान, फ़ैंटेसी से बाहर सचेत वाचक की टिप्पणी आदि प्रक्रियाओं से गुज़रती है जहाँ मुक्तिबोध कोई विशिष्ट क्रम नहीं बनने देते और अलग-अलग कविताओं में बार-बार हेर-फेर से उसे चुनौती देते हैं।

नामवर सिंह के शब्दों में "**नई कविता में मुक्तिबोध की जगह वही है, जो छायावाद में निराला की थी। निराला के समान ही मुक्तिबोध ने भी अपने युग के सामान्य काव्य-मूल्यों को प्रतिफलित करने के साथ ही उनकी सीमा को चुनौती देकर उस सर्जनात्मक विशिष्टता को चरितार्थ किया, जिससे समकालीन काव्य का सही मूल्यांकन हो सका।**"

मुक्तिबोध तारसप्तक के पहले कवि थे। मनुष्य की अस्मिता, आत्मसंघर्ष और प्रखर राजनैतिक चेतना से समृद्ध उनकी कविता पहली बार **'तार सप्तक'** के माध्यम से सामने आई, लेकिन उनका कोई स्वतंत्र काव्य-संग्रह उनके जीवनकाल में प्रकाशित नहीं हो पाया। मृत्यु के पहले श्रीकांत वर्मा ने उनकी **'एक साहित्यिक की डायरी'** प्रकाशित की थी, जिसका दूसरा संस्करण भारतीय ज्ञानपीठ से उनकी मृत्यु के दो महीने बाद प्रकाशित हुआ। ज्ञानपीठ ने ही **'चाँद का मुँह टेढ़ा है'** प्रकाशित किया था। इसी वर्ष नवंबर 1964 में नागपुर के विश्वभारती प्रकाशन ने मुक्तिबोध द्वारा 1963 में ही तैयार कर दिये गये निबंधों के संकलन **नयी कविता का आत्मसंघर्ष** तथा **अन्य निबंध'** को प्रकाशित किया था। परवर्ती वर्षों में भारतीय ज्ञानपीठ से मुक्तिबोध के अन्य संकलन **'काठ का सपना'** तथा **'विपात्र'** (लघु उपन्यास) प्रकाशित हुए। पहले कविता संकलन के 15 वर्ष बाद, 1980 में उनकी कविताओं का दूसरा संकलन **'भूरी भूरी खाक धूल'** प्रकाशित हुआ और 1985 में 'राजकमल' से पेपरबैक में छः खंडों में **'मुक्तिबोध रचनावली'** प्रकाशित हुई। यह हिंदी के इधर के लेखकों की सबसे तेजी से बिकने वाली रचनावली मानी जाती है। कविता के साथ-साथ, कविता विषयक चिंतन और आलोचना पद्धति को विकसित और समृद्ध करने में भी मुक्तिबोध का योगदान अन्यतम है।

कविता पर प्रस्तुति देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें

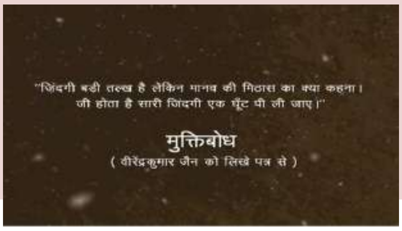

अटल बिहारी वाजपेयी : एक परिचय

जन्म 25 दिसंबर, 1924 **मृत्यु 16 अगस्त, 2018**

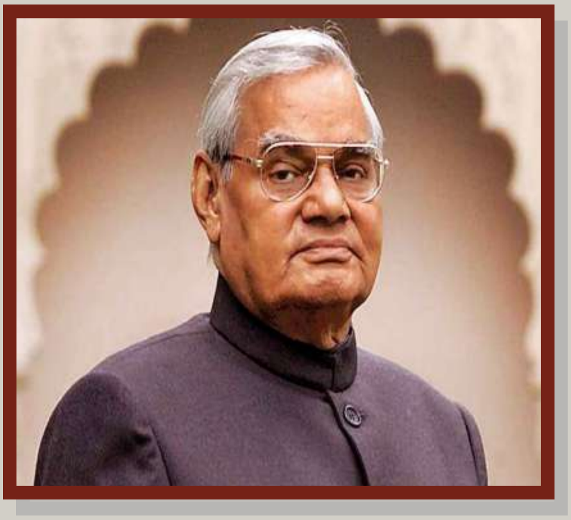

अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर, 1924 को मध्य प्रदेश के ग्वालियर में रहने वाले एक स्कूल शिक्षक के परिवार में हुआ। तीन बार भारत के प्रधानमंत्री थे। वे पहले 16 मई से 1 जून 1996 तक फिर 1998 मे और फिर 19 मार्च 1999 से 22 मई 2004 तक भारत के प्रधानमंत्री रहे। पंडित जवाहर लाल नेहरू के बाद वह पहले ऐसे प्रधानमंत्री हैं जो लगातार दो बार प्रधानमंत्री बने। वे हिंदी कवि, पत्रकार व एक प्रखर वक्ता थे। वे भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में एक थे, और 1968 से 1973 तक उसके अध्यक्ष भी रहे। उन्होंने लंबे समय तक राष्ट्रधर्म, पाञ्चजन्य और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत-प्रोत अनेक पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया।

वह चार दशकों से भारतीय संसद के सदस्य थे। वे लोकसभा में दस बार और राज्य सभा में दो बार चुने गए थे। उन्होंने लखनऊ के लिए संसद सदस्य के रूप में कार्य किया। आजीवन अविवाहित रहने का संकल्प लेने के कारण इन्हें राजनीति का भीष्म पितामह भी कहा जाता है।

2005 से वे राजनीति से संन्यास ले चुके थे। सर्वतोमुखी विकास के लिये किये गये योगदान तथा असाधारण कार्यों के लिये 2015 में उन्हें **भारत रत्न** से सम्मानित किया गया।

अटल बिहारी वाजपेयी राजनीतिज्ञ होने के साथ-साथ एक कवि भी थे। **मेरी इक्यावन कविताएँ** अटल जी का प्रसिद्ध काव्यसंग्रह है। वाजपेयी जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में मिले हैं। उनके पिता **कृष्ण बिहारी वाजपेयी** ग्वालियर रियासत में अपने समय के जाने-माने कवि थे। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली में काव्य रचना करते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनकी रगों में काव्य रक्त-रस अनवरत घूमता रहा है। उनकी सर्व प्रथम कविता **ताजमहल** थी। इसमें शृंगार रस के प्रेम प्रसून न चढ़ाकर उनका भी ध्यान ताजमहल के कारीगरों के शोषण पर ही गया। वास्तव में कोई भी कवि हृदय कभी कविता से वंचित नहीं रह सकता।

श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी की वाणी में काव्य पाठ प्रस्तुति देखने एवं सुनाने के लिए वीडियो चिह्न पर

बाजपेयी जी की कविता पर प्रस्तुति देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

गोदावरीश मिश्र : एक परिचय

जन्म 26 अक्टूबर 1886 **मृत्यु 25 जुलाई 1956**

प्रसिद्ध उड़िया साहित्यकार **गोदावरीश मिश्र** का जन्म **26 अक्टूबर 1886** को जगन्नाथ पुरी में हुआ था। गोदावरीश मिश्र की मृत्यु 25 जुलाई 1956 को हुई थी।
उड़िया भाषा के प्रमुख रचनाकार के रूप में गोदावरीश मिश्र ने कविता, उपन्यास, नाटक, कहानियाँ, जीवन चरित्र आदि सभी विधाओं में लेखन किया। राष्ट्रीय नवजागरण के क्षेत्र में भी गोदावरीश मिश्र की लेखनी का बड़ा योगदान रहा। उनकी आत्मकथा को **'भारतीय साहित्य अकादमी'** ने उनकी मृत्यु के बाद पुरस्कृत किया था। गोदावरीश मिश्र जी ने 1941 में उड़ीशा के शिक्षामंत्री और वित्तमंत्री का पद भी सम्भाला था। 'उत्कल विश्वविद्यालय' की स्थापना उनके अथक प्रयत्नों से ही सम्भव हुई थी।

देश सेवा की और सामाजिक बुराइयों को दूर करने की भावना गोदावरीश मिश्र के अन्दर आरंभ से ही थी। उन्होंने पं. गोपबन्धु द्वारा स्थापित 'सत्यवादी स्कूल' में 30 रुपये प्रतिमाह वेतन पर अध्यापक रहे। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि वे एक सच्चे राष्ट्र भक्त थे और देश सेवा की भावना उनके भीतर गहराई तक जमी हुई थी। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के रचनात्मक कार्यों को आगे बढ़ाने के लिये प्रयत्नशील गोदावरीश मिश्र की इतनी मान्यता थी कि 1927 में अपने उड़ीसा भ्रमण के समय गाँधी जी दो दिन उनके घर पर रहे थे। 'स्वराज्य पार्टी' के टिकट पर वे बिहार-उड़ीसा कॉन्सिल के सदस्य भी रहे। उन्होंने 1941 से 1944 तक परलखेमंडी के महाराजा मंत्रालय में वित्त और शिक्षा मंत्री के रूप में कार्य किया और साथ ही उन्होंने उत्थान विश्वविद्यालय की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित मिश्र जी महात्मा गांधी के कार्य को आगे बढ़ाने में अपना अहम् योगदान देते थे।

उनकी कविताओं ने राष्ट्र के प्रति जागरूकता पैदा करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका लिखा नाटक **'पुरुषोत्तम देब', 'मुकुंद देब', 'अर्ध शताब्दी रा ओड़िशा ओ तहिन रे मो स्थान'**ओड़िशा साहित्य के लिए एक अमर उपहार हैवे एक कुशल संपादक भी थे। 1924 में उन्होंने बानापुर से **"लोकमुख"** पत्रिका प्रकाशित की इसके साथ वे **'समाज'** के संपादक भी थे और शशिभूषण रथ द्वारा प्रकाशित **"ईस्टकोस्ट"** के लिए भी लिखते थे। साहित्य में दिया गया उनका योगदान आज भी अमर है।

उनके कुछ कविता संग्रह इस प्रकार हैं।

कुसुम – 1919
कलिका – 1921
किसलय – 1922
आलेखिका, कवितायन – 1926
चयनिका – 1932
गीतायन – 1953
गीति गुच्छ – 1960

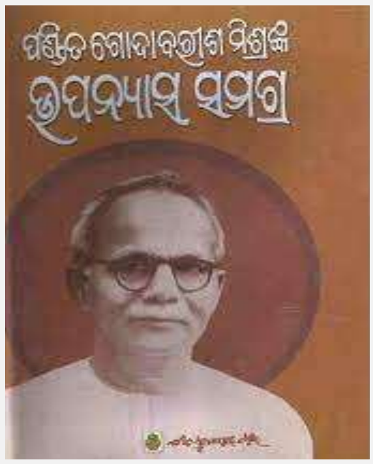

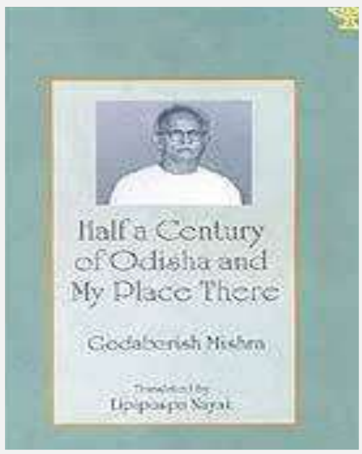

गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी: एक परिचय

आज़ादी का अमृत महोत्सव

जन्म 20 अक्टूबर, 1855

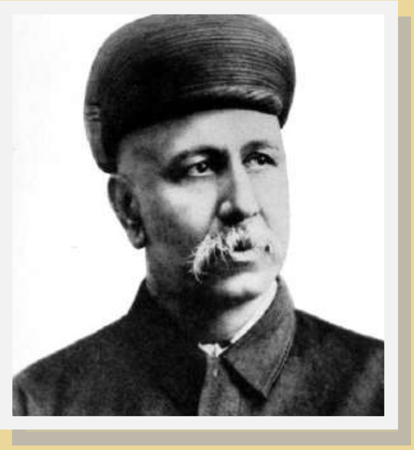

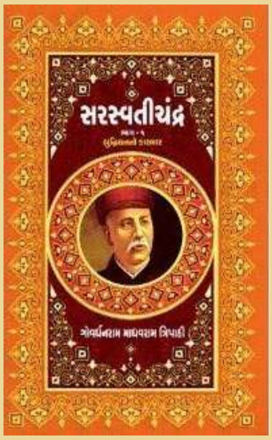

गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी (1855-1907 ई.) का व्यक्तित्व आधुनिक गुजराती साहित्य में कथाकार, कवि, चिंतक, विवेचक, चरित्रलेखक तथा इतिहासकार इत्यादि अनेक रूपों में मान्य है; किंतु उनको सर्वाधिक प्रतिष्ठा द्वितीय उत्थान के सर्वश्रेष्ठ कथाकार के रूप में ही प्राप्त हुई है। जिस प्रकार आधुनिक गुजराती साहित्य की पुरानी पीढ़ी के अग्रणी नर्मद माने जाते हैं उसी प्रकार उनके बाद की पीढ़ी का नेतृत्व गोवर्धनराम के द्वारा हुआ। संस्कृत साहित्य के गंभीर अनुशीलन तथा **रामकृष्ण परमहंस** और **विवेकानंद** आदि विभूतियों के विचारों के प्रभाव से उनके हृदय में प्राचीन भारतीय आर्य संस्कृति के पुनरुत्थान की तीव्र भावना जाग्रत हुई। उनका अधिकांश रचनात्मक साहित्य मूलत: इसी भावना से संबद्ध एवं उद्भूत है।

गोवर्धनराम की प्रारंभिक शिक्षा दीक्षा बंबई तथा नडियाद में संपन्न हुई। 1805 ई. में उन्होंने एल्फिन्स्टन कॉलेज से बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। शिक्षा समाप्त होते ही उनकी प्रवृति तत्वचिंतन और सामाजिक कल्याण की ओर उन्मुख हुई। **"सरस्वतीचंद्र"** उनकी सर्वप्रमुख साहित्यिक कृति है। कथा के क्षेत्र में इसे **"गुजराती साहित्य का सर्वोच्च कीर्तिशिखर"** कहा गया है। आचार्य आनंदशंकर बापूभाई ध्रुव ने इसकी गरिमा और भाव-समृद्धि को लक्षित करते हुए इसे **"सरस्वतीचंद्र पुराण"** की संज्ञा प्रदान की थी, जो इसकी लोकप्रियता तथा कल्पनाबहुलता को देखते हुए सर्वथा उपयुक्त प्रतीत होती है।

"स्नेहामुद्रा" गोवर्धनराम की ऊर्मिप्रधान भाव गीतियों का संस्कृतनिष्ठ शैली में लिखित एक विशिष्ठ कवितासंग्रह है जो सन् 1889 में प्रकाशित हुआ था। इसमें समीक्षकों की मानवीय, आध्यात्मिक एवं प्रकृतिपरक प्रेम की अनेक प्रतिभा एक समर्थ काव्यविवेचक के रूप में प्रकट हुई है। "विल्सन कॉलेज, साहित्य सभा" के समक्ष प्रस्तुत अपने गवेषणपूर्ण अंग्रेजी व्याख्यानों के माध्यम से उन्होंने प्राचीन गुजराती साहित्य के इतिहास को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने का प्रथम प्रयास किया। इनका प्रकाशन “**क्लैसिकल पोएट्स ऑफ गुजरात ऐंड देयर इनफ्लुएंस ऑन सोयायटी ऐंड मॉरल्स"** नाम से हुआ है।

1905 में **गुजराती साहित्य परिषद** के प्रमुख रूप के रूप में दिए गए अपने भाषण में इन्होंने आचार्य आनंदशंकर बापूभाई ध्रुव से प्राप्त सूत्र को पकड़कर नरसी मेहता के कालनिर्णय की जो समस्या उठाई, उस पर इतना वादविवाद हुआ कि वह स्वयं ऐतिहासिक महत्व की वस्तु बन गई। जीवन चरित लेखक के रूप में उनकी क्षमता **"लीलावती जीवनकला"** (ई. 1906) तथा **"नवलग्रंथावलि**” (ई. 1891) के उपोदघात से अंकित की जाती है।

गोवर्धनराम माधवराम त्रिपाठी जी की जीवनी देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा : एक परिचय

जन्म 12 नवम्बर 1909 **मृत्यु 14 सितम्बर 1949**

लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा (जन्म 12 नवम्बर 1909, मृत्यु 14 सितम्बर 1949) **नेपाली** साहित्य के महाकवि, नाटककार और उपन्यासकार हैं। देवकोटा नेपाली साहित्य के विभिन्न विधाओं में कलम चलाने वाले बहुमुखी प्रतिभाशाली थे। उनके द्वारा लिखित कविता और निबन्ध उच्च कोटि के माने जाते हैं। उन्होंने **मुनामदन, कुञ्जिनी जैसे खण्डकाव्य** और **सुलोचना, शकुन्तला, प्रमिथस, महाराणाप्रताप जैसे अमर काव्य** लिखे जिसके कारण नेपाली साहित्य को समृद्धि मिली। नेपाली साहित्य में **मुनामदन** सर्वोत्कृष्ट काव्य माना जाता है।

देवकोटा पण्डित तिलमाधव और अमर राज्यलक्ष्मी देवी के तृतीय पुत्र थे। उनका जन्म धोबीधारा, काठमाण्डू में हुआ था। वे बचपन से ही कविता लिखने में बहुत तेज थे। उन्हौंने 10 साल की उम्र में ही कविता लिखी थी। बाद में उन्होंने नेपाली साहित्य में **रुमानी (स्वच्छन्दतावाद)** का आरम्भ किया जिसने नई पीढ़ी के लेखकों को बहुत प्रभावित किया। वे आधुनिक महाकवि हैं जिनका नकल आज के लेखक करना चाहते हैं। भारत के राहुल सांकृत्यायन ने एक बार कहा था कि **"भारत के पन्त, प्रसाद और निराला बराबर एक लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा है।"**

उनके कुछ लोकप्रिय कार्यों में सुलोचना , कुंजिनी , भिखारी और शकुंतला के साथ सबसे अधिक बिकने वाला मुना मदन भी शामिल है ।देवकोटा ने देश में एक आधुनिक नेपाली भाषा रोमांटिक आंदोलन शुरू करके नेपाली साहित्य में योगदान दिया। वह नेपाल में पैदा हुए पहले लेखक थे जिन्होंने नेपाली साहित्य में माहाकाव्य, कविताएं लिखना शुरू किया था। देवकोटा द्वारा भाषा के नवीन प्रयोग के साथ नेपाली कविता नई ऊंचाइयों पर पहुँच गई। उन्होंने मूना मदन (1930) नेपाली में लोकप्रिय एक लंबी कविता लिखी। मूना मदन निस्संदेह नेपाली साहित्य के इतिहास में सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तक है।

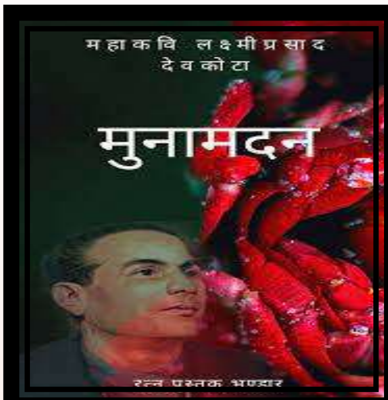

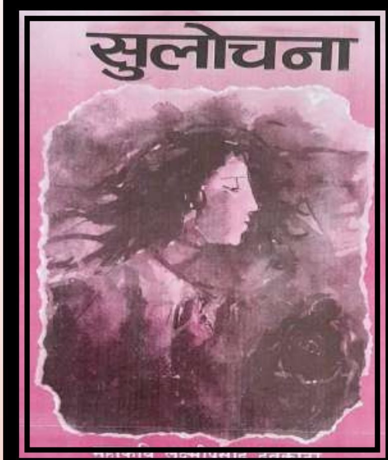

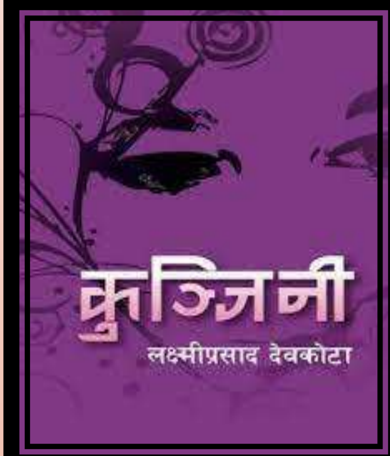

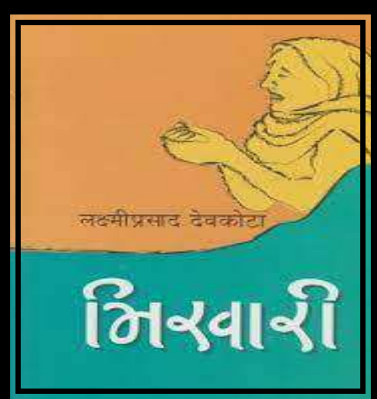

लक्ष्मीप्रसाद देवकोटा जी की कविता पर प्रस्तुति देखने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
वाराणसी, 13 एवं 14 नवंबर, 2021

वाराणसी में आयोजित दो दिवसीय **"अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन – 13-14 नवंबर 2021"** का उद्घाटन श्री अमित शाह, माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री, भारत सरकार, श्री योगी आदित्यनाथ, माननीय मुख्यमंत्री, उत्तरप्रदेश सरकार, श्री नित्यानन्द राय, माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्यमंत्री, श्री निशिथ प्रमाणिक, माननीय गृह राज्यमंत्री ने यूको बैंक की राजभाषा स्टॉल पर दीप प्रज्ज्वलित करके किया।

श्री अमित शाह जी ने सभा को संबोधित करते हुए हिन्दी के साथ-साथ क्षेत्रीय भाषाओं के प्रचार-प्रसार पर भी बल दिया एवं विभिन्न भाषाओं के साहित्य को हिन्दी में अनुवाद करने का अनुरोध किया।

पहला सत्र भारतेन्दु सभागार में श्री हरिवंश नारायण सिंह, उपसभापति, राज्यसभा की अध्यक्षता में हुआ। सत्र का विषय स्वतन्त्रता संग्राम और स्वतंत्र भारत में संपर्क भाषा एवं जनभाषा के रूप में हिन्दी की भूमिका थी।

समानांतर सत्र जयशंकर प्रसाद सभागार में प्रोफेसर राम मोहन पाठक, पूर्व कुलपति, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नई की अध्यक्षता में हुआ जिसका विषय मीडिया में हिन्दी : प्रभाव एवं योगदान था।

सम्मेलन में पुस्तक प्रदर्शनी भी लगाई गई थी जिसमें यूको बैंक का भी स्टाल था। माननीय श्री अमित शाह जी ने प्रदर्शनी का उद्घाटन यूको बैंक के स्टाल से दीप प्रज्ज्वलित से किया। यूको बैंक के स्टाल में दूसरे दिन माननीय श्री अजय मिश्रा जी का आगमन हुआ।

द्वितीय सत्र भारतेन्दु सभागार में प्रोफेसर रीता बहुगुणा जोशी, संसद सदस्य की अध्यक्षता में हुआ जिसका विषय राजभाषा के रूप में हिन्दी की विकास यात्रा और योगदान था।

समानांतर सत्र जयशंकर प्रसाद सभागार में डॉ मनोज राजोरिया, संसद सदस्य, संसदीय राजभाषा समिति की अध्यक्षता में हुआ जिसका विषय **वैश्विक संदर्भ में हिन्दी – चुनौतियाँ और संभावनाएं** था।

तृतीय सत्र भारतेन्दु सभागार में **श्री केसरी नाथ त्रिपाठी, पूर्व राज्यपाल (पश्चिम बंगाल)** एवं साहित्यकार की अध्यक्षता में हुआ जिसका विषय भाषा चिंतन की **भारतीय परंपरा एवं संस्कृति के निर्माण में हिन्दी की भूमिका** था।

समानांतर सत्र जयशंकर प्रसाद सभागार में **श्री हृदय नारायण दीक्षित, अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश, विधानसभा** की अध्यक्षता में हुआ जिसका विषय **न्यायपालिका में हिन्दी – प्रयोग और संभावनाएं** था।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का वीडियो देखने के लिए इस वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

सार के साथ-साथ विभिन्न जानकारियों को समाहित किए हुए था। पहले दिन संध्या को सुंदर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्रों की प्रस्तुति के साथ-साथ शहनाई वादन, गायन एवं नई दिल्ली से आई कत्थक केंद्र की प्रस्तुति थी।

दिनांक 14.11.2021 को प्रात: 8 बजे ट्रेड सेंटर से लमही के लिए प्रस्थान किया गया। प्रेमचंद संस्थान में मुंशी प्रेमचंद जी को श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए एक संक्षिप्त कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अजय कुमार मिश्रा, माननीय गृह राज्य मंत्री द्वारा की गई। इसके पश्चात दीनदयाल हस्तकला संकुल वाराणसी में प्रात: 10.30 बजे प्रेमचंद सभागार में विषय – **रंगमंच,सिनेमा और हिंदी** विषय पर सत्र रखा गया उक्त सत्र में नई दिल्ली, बेंगलूरु एवं प्रयागराज आदि स्थानों से श्रेष्ठ अतिथि वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

समानांतर सत्र, कबीर सभागार में विषय – **काशी का हिंदी साहित्य में योगदान** पर रखा गया। यह अत्यंत ही सारगर्भित, रोचक व ज्ञानवर्धक सत्र रहा।

उक्त दोनों सत्रों में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से राजभाषा हिंदी की वर्तमान स्थिति एवं उसके प्रचार प्रसार व बदलते परिवेश में उसकी महत्ता एवं उपयोगिता के संदर्भ में भी विचार विमर्श किया गया।

दिनांक 14.11.2021 को प्रेमचंद सभागार में समापन सत्र का आयोजन किया गया। श्री आनंद कुमार, निदेशक (नीति) द्वारा दो दिवसीय सम्मेलन का संक्षेप सार प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर सचिव महोदया राजभाषा विभाग द्वारा सभी को संबोधित किया गया। समापन सत्र के दौरान विशेष रूप से श्री अजय कुमार मिश्रा माननीय गृह राज्य मंत्री विशेष रूप से उपस्थित थे। उन्होंने अपने संबोधन में उक्त सम्मेलन की सफलता हेतु सभी को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। समापन सत्र में संयुक्त सचिव, राजभाषा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

उक्त सम्मेलन में भारत देश के विभिन्न प्रांतों से उपस्थित भिन्न भिन्न बैंकों, उपक्रमों व संस्थानों द्वारा प्रदर्शित स्टॉल का समस्त गणमान्य जन द्वारा दौरा किया गया। यूको बैंक की स्टॉल का दौरा करने आए सभी विद्वजनों ने यूको बैंक को प्राप्त कीर्ति पुरस्कार एवं यूको बैंक में हो रहे राजभाषा संबंधी श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन
वाराणसी, 13 एवं 14 नवंबर, 2021

क्रिसमस : आशा और आनंद

आशीष शीतल बाखला
प्रबंधक (राजभाषा)
राजभाषा विभाग

क्रिसमस अथवा बड़ा दिन ईसाइयों के सबसे महत्वपूर्ण त्यौहारों में से एक है। इसे प्रतिवर्ष 25 दिसंबर को ईसा मसीह के जन्मदिवस के रूप में मनाया जाता है, हालांकि ऐतिहासिक रूप से सिद्ध नहीं है कि ईसा मसीह का जन्म इसी तिथि में हुई थी। ऐसा माना जाता है कि इस तिथि की गणना रोमन संस्कृति के किसी त्यौहार के आधार पर की गई है। ईसा मसीह के जन्मदिवस के रूप में स्थापित हो चुके इस त्यौहार को हर्षोल्लास के साथ मनाने की परंपरा सारे विश्व में है और आज ईसाई और गैर-ईसाईयों के बीच सबसे लोकप्रिय त्यौहारों में से एक है।

ईसा एक यहूदी परिवार में जन्मे थे। जब उनका जन्म हुआ उनका देश रोमन साम्राज्य के अधीन था। गुलामी के बीच टूटे समाज में लोगों को धार्मिक आडंबर की दोहरी मार सहनी पड़ती थी। उनके प्राचीन धर्मग्रंथों में एक मसीहा की भविष्यवाणी की गई थी जो उनको सारे दु:खों से मुक्त कराएगा। तब लोगों की कल्पना थी कि कोई ऐसे राजा का अभ्युदय होगा जो शक्तिशाली राष्ट्र का निर्माण करेगा। ईसाई अनुयायी ईसा को मसीहा के रूप में देखते हैं और उन्हें आध्यात्मिक रूप से स्वतंत्र और स्वस्थ करने वाले शांति के राजकुमार के रूप में मानते हैं। उनके लिए क्रिसमस का त्यौहार 'आशा' के पूर्ण होने का त्यौहार है।

क्रिसमस की तैयारी महीनों पहले से शुरू हो जाती है क्योंकि ये उल्लास का त्यौहार है, परिवार में किसी व्यक्ति की जन्मदिवस की तैयारी की भांति ही इसकी तैयारी की जाती है। लोग घरों की साज-सज्जा करते हैं, नए पोशाकों की खरीददारी करते हैं, खान-पान, भोज आदि की तैयारी के साथ-साथ अपने ईष्ट-मित्रों के लिए उपहार चुनने-खरीदने जैसे कार्य महीने भर पहले ही शुरू कर देते हैं। इस तैयारी का दूसरा पक्ष यह है कि क्रिसमस बाज़ार के लिए सबसे लोकप्रिय अवसरों में से एक है। दुनिया के कई देशों में क्रिसमस की खरीददारी अर्थव्यवस्था के लिए अति महत्वपूर्ण है। इसका अंदाज़ा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि अमेरिका में 2019 ई. में क्रिसमस सीजन में खुदरा बिक्री ने 1 ट्रीलियन का आंकड़ा पार कर लिया था।

एक ईसाई के लिए उपर्युक्त तैयारी अति महत्वपूर्ण है, किंतु हर्षोल्लास का यह त्यौहार उनके लिए आध्यात्मिक महत्व का भी त्यौहार है। अत: उनकी आध्यात्मिक तैयारी की शुरुआत 40 दिन पूर्व शुरू होती है। 40 दिनों के इस कालखंड को 'आगमन काल' कहा जाता है जिसमें वो आत्मिक शुद्धता के साथ ईसा के स्वागत की तैयारी करते हैं।

<u>क्रिसमस कैरल</u>

क्रिसमस के गीत अथवा क्रिसमस कैरल क्रिसमस के उल्लास को चार-चाँद लगाते हैं। क्रिसमस की शाम अर्थात 24 दिसंबर की रात को गिरजाघरों में विशेष

क्रिसमस : आशा और आनंद

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रार्थना सभा आयोजित किए जाते हैं, गिरजाघरों में 'आगमन काल' के बाद क्रिसमस के गीत गाने की शुरुआत इसी समय से होती है। गायक मंडली (क्वायर) इनका संचालन करते हैं। कई देशों में क्रिसमस मिलन समारोह का भी प्रचलन हैं, जहाँ लोग क्रिसमस के गीतों के माध्यम से एक दूसरे को क्रिसमस की शुभकामनाएँ देते हैं।'जिंगल बेल' शायद ही किसी व्यक्ति ने न सुनी होगी। कई देशों में लोग, खास कर युवा और बच्चे समूह बना कर आस-पास के घरों में क्रिसमस की शुभकामनाएँ देने जाते हैं। ये इन घरों में क्रिसमस के गीत गाते हैं और घर के मालिक भी इनका स्वागत खान-पान अथवा छोटे-मोटे उपहारों से करते हैं।

<u>क्रिसमस और सांता क्लौज़</u>

क्रिसमस से जुड़ी किवदंतियों में शायद 'सांता क्लौज़' सबसे बड़ी है। वास्तविक रूप से ईसाई धर्म में 'सांता क्लौज़' की परिकल्पना कहीं नहीं है परंतु आज 'सांता क्लौज़' नाम के इस चरित्र को क्रिसमस से अलग नहीं किया जा सकता। इस चरित्र की परिकल्पना की शुरुआत के विषय में लोगों में अलग-अलग राय हैं। रोमन कैथलिक चर्च में संत निकोलस काफी लोकप्रिय रहे हैं जो लोगों के बीच तोहफ़े बाँटने के लिए मशहूर थे। कुछ लोग इस परिकल्पना को उनसे जोड़ कर देखते हैं। ऐसा माना जाता है कि समय के साथ एक अंग्रेजी नाटक का पात्र 'क्रिसमस फादर' को मिला कर 'भेंट देने वाले' सांता क्लौज़ की परिकथा बनाई गई है।

'सांता क्लौज़' खास तौर से बच्चों के बीच बहुत लोकप्रिय है। उनके लिए 'सांता क्लौज़' सफ़ेद बालों वाला एक बूढ़ा व्यक्ति है, जो उतरी ध्रुव में कहीं रहता है। उसके पास एक कारख़ाना है और ढेर सारे बौने कर्मचारी जो सारे विश्व के बच्चों की ख़्वाहिश पूरी करने के लिए बिना रुके काम करते रहते हैं। जब क्रिसमस आता है, 'सांता क्लोज़' अपने जादुई स्लेज़ (बर्फ मेँ चलने वाली गाड़ी) पर तोहफा बांटने निकलते हैं जिसे नौ रेनडियर – रुडोल्फ़, कॉमेट,विकसन,डैशर,डोनर,क्यूपिड,डान्सर,प्रानसर और ब्लिट्ज़न चलाते हैं। 'सांता क्लोज़' क्रिसमस की रात अपने स्लेज़ से उड़ते हुए पूरी दुनिया में घूम-घूम कर बच्चों को तोहफ़े बांटते हैं। तोहफ़ा बांटने का उनका ढंग भी निराला है, वो किसी से नहीं मिलते बल्कि जब रात को बच्चे सो जाते हैं तो चुपके से उनका तोहफ़ा छोड़ जाते हैं।

'सांता क्लौज़' की परिकल्पना भले ही काल्पनिक है किंतु लोगों को 'आशा' देती है साथ ही 'बांटने की खुशी' को भी प्रतिबिंबित करती है जो वास्तविक रूप से क्रिसमस का सार है।

<u>क्रिसमस ट्री</u>

ऐसा माना जाता है कि क्रिसमस ट्री की शुरुआत 16वीं सदी मे जर्मनी से हुई थी जहाँ लोग त्यौहारों में पेड़ों को सजाया करते थे। ये भी माना जाता है कि प्रसिद्ध ईसाई धर्मसुधारक मार्टिन लूथर ने मोम बत्ती जला कर क्रिसमस ट्री को रोशन करने की शुरुआत की थी। दरअसल पुराने वक्त में वैसे वृक्ष को

लोग खास महत्व का समझते थे जो सालों भर हरे-भरे रहते थे। कई देशों में खास कर सर्दियों में पाइन और फर वाले ऐसे वृक्षों की टहनियाँ दरवाजे- खिड़कियों में लगाने का प्रचलन था। लोगों का विश्वास था कि ऐसा करने से भूत-प्रेत, अशुद्ध आत्मा और बीमारियाँ घर मेँ प्रवेश नहीं कर पातीं हैं।

क्रिसमस 'क्रिसमस ट्री' के बिना अधूरा समझा जाता है। इसकी लोकप्रियता इससे समझी जा सकती है कि क्रिसमस के प्रतीक के रूप मेँ अक्सर क्रिसमस ट्री के चित्र का इस्तेमाल किया जाता है। अलग- अलग देशों में अलग-अलग वृक्षों का इस्तेमाल क्रिसमस ट्री बनाने के लिए किया जाता है जो उस प्रदेश में उपलब्धता पर निर्भर करती है।

चरनी अथवा क्रिब

ऐसी मान्यता है कि ईसा मसीह का जन्म एक गौशाले में हुई थी। पवित्र बाईबल के अनुसार ईसा के माता-पिता नजरेथ के अपने घर से दूर बेथलहम नामक नगर में हो रहे जनगणना के लिए गए हुए थे। अपनी गर्भवती पत्नी मेरी को लेकर जोसेफ (ईसा के पिता) नगर में भटकते रहे कि कहीं किसी सराय में सर्द रात काटने का ठिकाना मिल जाए, किंतु उन्हें कहीं आसरा नहीं मिला। अंत में हार कर उन्हें एक गौशाले में आश्रय लेनी पड़ीं, जहाँ रात में ही ईसा का जन्म हुआ।

ईसा के अनुयायी उन्हे ईश्वर का पुत्र मानते हैं। उनका मानना है कि यदि ईश्वर चाहते तो उनका जन्म किसी शाही माहौल में होता किंतु गौशाले में जन्म ले कर उन्होने विनम्रता का प्रमाण दिया। अत: क्रिसमस के सजावट में चरनी भी विशिष्ट स्थान रखती है। चरनी या क्रिब के रूप में गौशाले की अनुकृति बनाई जाती है जहाँ ईसा के जन्म की घटनाओं को वर्णित किया जाता है।

चरनी या क्रिब बनाने की शुरुआत का श्रेय कैथेलिक संत फ्रांसिस असीसी को दिया जाता है। 1223 ई. को उन्होने क्रिसमस की शाम धार्मिक मनन-चिंतन के उद्देश्य से नाद्य रूप में जीवंत क्रिब की रचना की थी। आगे चल कर ईसा के जन्म की यह घटना मूर्त रूप में लोगों के घरों में सजाया जाने लगा।

क्रिसमस एक वैश्विक त्यौहार है। इसे कई देशों में अब भी पारंपरिक तौर पर 12 दिनों के जश्न के रूप में मनाया जाता है जो ईसा के नामकरण के त्यौहार 6 जनवरी तक चलता है। किसी के जन्म का उत्सव निश्चय ही जश्न के साथ मनाया जाना चाहिए। जीवन में कई कठिनाइयाँ आती रहती हैं, क्रिसमस यह संदेश देता है कि जीवन में आशा बनाए रखें, आपके दु:खों का अंत ज़रूर आएगा। कोविड-19 से जूझ रही इस दुनिया में जहाँ मानव जीवन का भविष्य अनिश्चितता के दौर से गुजर रही है, यह क्रिसमस आशा का दीप दिखाने का काम कर रही है। जहाँ आशा है, दु:ख वहाँ से दूर रहती है और आनंद वहीं पर बसता है। सकारात्मक बनने से ही सकारात्मक परिणाम निकल आते हैं।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव: देशभक्ति काव्य-संध्या

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आजादी का अमृत महोत्सव: उक्त अवसर पर कॉफी कप का विमोचन कराते हुए एमडी सर

यूको बैंक द्वारा दिनांक 02.12.2021 को आयोजित आजादी का अमृत महोत्सव: देशभक्ति काव्य-संध्या में काव्य प्रस्तुति

आजादी का अमृत महोत्सव: देशभक्ति काव्य-संध्या में कीर्ति पुरस्कार -प्रथम की ट्रॉफी के साथ श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी, श्री इशराक अली खान, कार्यपालक निदेशक, नरेश कुमार, महाप्रबंधक- मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा एवं डॉ. लखवीर सिंह निर्दोष

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डिब्रूगढ़, असम में दिनांक 18 दिसंबर, 2021 को आयोजित पूर्व और पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन- एक रिपोर्ट

सचिव- राजभाषा महोदया का संबोधन सुनने के लिए वीडियो चिह्न पर क्लिक करें।

एमडी सर का संबोधन सुनने के लिए वीडियो चिह्न पर

पूर्व और पूर्वोत्तर क्षेत्रों का संयुक्त क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन दिनांक 18 दिसंबर, 2021 को असम राज्य के डिब्रूगढ़ शहर में आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के मंचासीन गणमान्य अतिथियों में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की सचिव (राजभाषा) श्रीमती अंशुली आर्या, संयुक्त सचिव (राजभाषा); डॉ मीनाक्षी जॉली, निदेशक (प्रशासन); श्री मोहन लाल वाधवानी, निदेशक (कार्यान्वयन); श्री बाबू लाल मीना, निदेशक; यूको बैंक के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री अतुल कुमार गोयल, ब्रह्मपुत्र क्रैकर्स एंड पॉलिमर्स लि.(बीसीपीएल) के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी श्री रीप हज़ारिका तथा डिब्रूगढ़ जिले के उपायुक्त श्री विश्वजीत पेगू थे। नराकास (बैंक), कोलकाता के अध्यक्ष के रूप में यूको बैंक के माननीय एमडी एवं सीईओ श्री अतुल कुमार गोयल ने नराकास (बैंक), कोलकाता द्वारा उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु श्रीमती अंशुली आर्या, सचिव (राजभाषा) के कर-कमलों से **वित्तीय वर्ष 2017-18 एवं 2018-19 के लिए प्रथम तथा वित्तीय वर्ष 2019-20 के लिए द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया**। उन्होंने पूर्व और पूर्वोत्तर क्षेत्रों के अनेक कार्यालयों के प्रतिनिधियों को क्षेत्रीय राजभाषा पुरस्कार के शील्ड एवं प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए।

सचिव (राजभाषा), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार श्रीमती अंशुली आर्या ने एमडी एवं सीईओ सर श्री अतुल कुमार गोयल तथा बैंक के अन्य राजभाषा अधिकारियों के बीच यूको बैंक की राजभाषा प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। सचिव महोदया को यूको बैंक में राजभाषा की पहल, क्षेत्रीय भाषाओं से संबंधित कार्यों और अन्य गतिविधियों से परिचित कराया गया। अपने संभाषण में एमडी महोदय ने हमारे बैंक में हो रहे राजभाषा कार्यों और गतिविधियों का संक्षेप में ब्योरा दिया, साथ ही राजभाषा हिंदी के विकास और क्षेत्रीय भाषाओं के साथ उसके समन्वय की आवश्यकता पर बल दिया।

डिब्रूगढ़, असम में दिनांक 18 दिसंबर, 2021 को आयोजित पूर्व और पूर्वोत्तर क्षेत्रों के क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन

श्रीमती अंशुली आर्या, माननीय सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार यूको बैंक के स्टाल का उद्घाटन करते हुए, साथ में हैं श्री अतुल कुमार गोयल, एमडी एवं सीईओ

डॉ मीनाक्षी जौली, संयुक्त सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार का यूको बैंक के स्टाल पर स्वागत

श्री बी एल मीना, निदेशक, राजभाषा विभाग, भारत सरकार का यूको बैंक के स्टाल पर स्वागत

श्री मोहन लाल वाधवानी , निदेशक, राजाभाषा विभाग, भारत सरकार का यूको बैंक के स्टाल पर स्वागत

डिब्रूगढ़, असम में एमडी एवं सीईओ महोदय की बैंक से संबद्ध गतिविधियाँ

मध्याह्न भोजन के बाद एमडी महोदय ने डिब्रूगढ़ की स्थानीय डिब्रूगढ़ और मनकोटा शाखाओं का दौरा किया, वहाँ मौजूद स्टाफ से मिले और उनके कार्यों का जायजा लिया। जोरहाट अंचल के समक्ष शाखा प्रबंधकों के साथ एमडी महोदय के संबोधन हेतु एक बैठक का आयोजन किया गया था। इस बैठक में अंचल कार्यालय के कार्मिक भी थे, साथ ही अन्य अंचलों से क्षेत्रीय राजभाषा सम्मेलन में आए राजभाषा अधिकारी भी सम्मिलित हुए।

बैठक को संबोधित करते हुए जोरहाट अंचल प्रबंधक श्री अभिजीत दास जी ने डिब्रूगढ़ जैसे छोटे शहर में माननीय एमडी एवं सीईओ महोदय के आगमन पर अंचल की ओर से प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि जोरहाट अंचल अपने कारोबारी विकास के लिए भरपूर प्रयास कर रहा है और कुछ उपलब्धियाँ अंचल को हासिल हुई हैं, फिर भी बहुत कुछ करना अभी शेष है। उन्होंने आशा जताई कि अपने प्रयत्नों के फलस्वरूप जोरहाट अंचल शीघ्र ही "ए+" श्रेणी का कार्यनिष्पादन करके बेहतरीन अंचलों की पंक्ति में शुमार होगा।

डिब्रूगढ़ के समीक्षा बैठक में एमडी सर का संबोधन

अपने संभाषण में माननीय एमडी महोदय ने जो विचार व्यक्त किए वह यूको बैंक के पिछले तीन वर्षों की जद्दोजहद के विहंगावलोकन के सदृश था और उसे सुनना अपने आप में एक विलक्षण अनुभव था। आनेवाले समय में बैंक की प्रगतिशील कार्यनीति और दिशा पर भी एमडी महोदय ने प्रभावी तरीके से प्रकाश डाला।

एमडी महोदय ने अपने संबोधन में सर्वप्रथम कहा कि असमीया संस्कृति के गौरव-स्थान डिब्रूगढ़ में आकर उन्हें विशेष प्रसन्नता हुई है। डिब्रूगढ़ शब्द का अर्थ स्वर्णस्थली बताया गया है। उन्होंने याद दिलाया कि यूको बैंक में उन्हें तीन वर्ष पूर्ण हो चुके हैं और ये तीन वर्ष बैंक में रूपांतरण के वर्ष रहे हैं। 22000 यूकोजन की संयुक्त शक्ति ने मिलकर इस रूपांतरण को संभव बनाया है। जब वे बैंक में आए थे तब स्थिति इतनी आश्वस्त नहीं थी। बैंक पर त्वरित सुधार कार्रवाई(पीसीए) लागू था और कई मायनों में बैंक की स्थिति संशययुक्त थी। स्थिति को बेहतर बनाने के लिए बैंक के पास तीन विकल्प थे –

- आस्तियों की बिक्री कर हानि को पाटना
- जो स्थिति और सीमाएँ हैं उनमें कारोबार करना, जो बैंक को प्राकृतिक मृत्यु की ओर ले जाने जैसा होता, और
- बाज़ार का जोखिम उठाना – कोष का बुद्धिमत्तापूर्ण सजग प्रबंधन करना

बैंक ने तीसरा विकल्प चुना, जिससे हमारा बाज़ार जोखिम धीरे-धीरे कम हुआ और कोष द्वारा अर्जित लाभ बढ़ता चला।

एमडी महोदय ने कहा कि भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा हमारे बैंक पर आरोपित त्वरित सुधार कार्रवाई (पीसीए) का वास्तव में यह अर्थ लिया जाना चाहिए:-

पी – लाभप्रदता (प्रॉफिटेबिलिटी) : सी – पूंजी पर्याप्तता (कैपिटल ऐडिक्वेसी) : ए- आस्ति गुणवत्ता,

और पीसीए का यही तात्पर्य बैंक ने मॉडल की तरह अपनाया, जो वास्तव में बैंक के कायापलट का मंत्र बन गया।

अध्यक्ष महोदय ने पूर्व राष्ट्रपति एवं मिसाइल मैन **अब्दुल कलाम जी की प्रसिद्ध पंक्ति** याद दिलाई कि **सपने वे नहीं जो नींद में आते हैं, सपने वे हैं जो सोने नहीं देते।** यूकोजन ने कड़ी मेहनत की, सजगता से परिस्थितियों का सामना किया, और ईश्वर के साहाय्य से हमारी स्थिति क्रमश: बेहतर होती गई। फिर एक दिन वह भी आया जब बैंक ने 17 तिमाहियों के पार होने के बाद लाभ दर्ज किया। इस संघर्ष की कहानी को स्मरण कर महोदय ने बड़े ही संजीदा अंदाज़ में ये पंक्तियाँ कहीं – **"मैं तो भूल चली बाबुल का देश, पिया का घर प्यारा लगे"!**

अब बैंक पीसीए से बाहर आ गया है। अत: अब हम संघर्ष के दूसरे दौर के साक्षी हैं।

बैंक के नेतृत्व ने बहुमुखी विकास के तीन लक्ष्य निर्धारित किए–

- पीसीए से बाहर होना
- पूर्वोत्तर का सर्वोत्तम बैंक बनना
- बैंक स्थापना के शताब्दी वर्ष 2043 तक यूको बैंक को देश के सर्वोत्तम बैंकों में से एक बनाना

प्रथम लक्ष्य हम प्राप्त कर चुके, द्वितीय लक्ष्य शीघ्र ही पूर्ण होता दिख रहा है। अत: अब हमारे सामने बैंक स्थापना के शताब्दी वर्ष 2043 तक सबसे उत्तम बैंकों में से एक राष्ट्रीयकृत बैंक बनकर दिखाने का दायित्व है। यह लक्ष्य निस्संदेह कठिन है और कड़ी मेहनत मांगता है, परंतु संभव अवश्य है। अब जो हमारी स्थिति निर्मित हुई है, उसके अवलोकन से स्पष्ट हो जाता है कि बैंक के सभी मानदंडों में अभूतपूर्व सुधार आया है। बैंक ने विभिन्न कसौटियों पर खरा उतरकर अपने प्रतियोगी बैंकों को टक्कर दी है, बल्कि कई मानदंडों में तो उसका प्रदर्शन सर्वोत्तम है! अब लाभप्रदता के सभी घटक सकारात्मक रुझान दर्शा रहे हैं और पूंजी की पर्याप्तता भी सामान्य से कहीं बेहतर स्थिति में आ चुकी है। अत: पूंजी को निष्क्रिय रूप में रखना उचित नहीं होगा। अब हमें गुणवत्तायुक्त ऋण-अग्रिम पर पूरा पूरा ध्यान देना चाहिए जो कि बैंकिंग की मूलभूत गतिविधि है।

भविष्य की ओर हमारे बैंक को जो मार्ग ले जा रहा है, उसके विषय में महोदय ने एक शक्तिशाली मंत्र दिया – "चेंज योर माइंडसेट" (अपनी मानसिकता बदलो)। इस आधार वाक्य का उन्होंने अनेकों-अनेकों बार अपने संबोधन में उपयोग किया। उन्होंने उद्धृत किया कि अपनी तकदीर खुद लिखो नहीं तो कोई और लिखेगा। उन्होंने कहा कि नेतृत्व तीन प्रकार के हैं:

- जो होनेवाले बदलाव को देख लेते हैं और उसके अनुरूप ढल जाते हैं
- जो तब तक नहीं बदलते जब तक और कोई चारा न रह जाए
- जो कभी नहीं बदलते

तीसरे प्रकार के नेतृत्व के उदाहरण में महोदय ने नोकिया, हिंदुस्तान मोटर्स की एम्बैसेडर कार और कोडक जैसी कंपनियों का उदाहरण दिया जिनकी बाज़ार हिस्सेदारी किसी समय बहुत ज्यादा थी, लेकिन इन कंपनियों ने अपने को बदलने का ध्यान नहीं रखा जिसके कारण वक्त ने इन्हें पछाड़ दिया। समय की पदचाप को पहचानकर चलना है। दूसरे, न केवल बदलने के लिए तैयार रहना है, बल्कि अन्यों की अपेक्षा तीव्रता से बदलना है ताकि विकास की धारा में पीछे न रह जाएँ।

एमडी महोदय ने कहा कि आज का बाज़ार पूर्वाग्रही बाज़ार है। एक ही वस्तु या सेवा के लिए अनेकानेक विकल्प उपलब्ध हैं। ऐसे में, सबसे बड़ी चुनौती है ग्राहक को अपने से जोड़ना और लंबी अवधि के लिए जोड़े रख पाना।

महोदय ने ग्राहक सेवा की अवधारणा को बहुत महत्त्व दिया, व्यापक अर्थों में समझाया, उसके विभिन्न रूपों को लेकर चर्चा की। उन्होंने **महात्मा गांधी** के उस उद्धरण का स्मरण किया जिसमें कहा गया है कि **ग्राहक हमारे द्वार पर आया हुआ देवता है**। ग्राहक की सेवा करके हम ग्राहक पर कोई उपकार नहीं करते, बल्कि हमसे सेवा लेकर वही हम पर उपकार करता है।

ग्राहक के ही कारण हम कारोबार में अस्तित्व में हैं। किसी ग्राहक की सेवा करके, जैसे किसी जरूरतमंद ग्राहक को ऋण देने से उसके मुखमंडल पर जो प्रसन्नता आ जाती है, उसकी प्रसन्नता के लिए हम बैंकरों को लालायित रहना चाहिए, क्योंकि उसी में हमारी भी आत्मसंतुष्टि निहित रहती है, और वही हमारे कर्तव्य का सबसे बड़ा प्रमाण होता है। ग्राहक सेवा के अनेक पहलू हैं – ग्राहक की अच्छी आवभगत, ग्राहक को एवं उसकी जरूरतों को उत्तम प्रकार से समझना, समयबद्ध तरीके से उसकी सेवा करना (टीएटी), ग्राहक की संतुष्टि सुनिश्चित करना आदि। एमडी महोदय ने अपने खुद के जीवन की एक घटना भी सुनाई। घटना उन दिनों की जब वे बुंदेलखंड इलाके के महोबा जिले की एक ग्रामीण शाखा में पदस्थ थे। कई प्रकार की कठिनाइयों और रुकावटों के होते हुए भी और कार्यालय समय समाप्त हो जाने पर भी कैसे उन्होंने एक ग्राहक को पचास रुपये का ड्राफ्ट बनाकर दिया, जिसे न बनाए जाने पर और तत्काल कुरियर से न भिजवाए जाने पर उस ग्राहक को मिली हुई रेलवे की नौकरी से हाथ धोना पड़ सकता था। बहुत बाद में उसी ग्राहक ने उन्हें बैंक कारोबार में बहुत बड़ा सहयोग भी दिया और उनके प्रति निष्ठावान भी रहा। इसी प्रकार के अन्य उदाहरण भी महोदय ने अपने निजी जीवन से सुनाए और परामर्श दिया कि ग्राहक सेवा कारोबार की सबसे बड़ी कसौटी है। उन्होंने कहा कि किसी भी शाखा की कासा जमा बहुत सीमा तक ग्राहक सेवा के स्तर से निर्धारित होती है। आपके किस सेवा कार्य से किस तरह की संभावनाओं के द्वार खुलेंगे इसका कोई ठोस नियम नहीं है। परंतु की गई भलाई किसी न किसी रूप में प्रतिफलित होती ही है। अत: मस्तिष्क सकारात्मक रखते हुए, सजगता के साथ ग्राहक सेवा करनी चाहिए तथा अनुचित व्यावसायिक व्यवहार को कोसों दूर रखना चाहिए, आखिर ऊपरवाले को मुंह भी तो दिखाना है! उन्होंने यह भी कहा कि किसी की भी आलोचना करने से कुछ हासिल नहीं होता। इसके साथ ही ग्राहकों और अन्य कार्मिकों के साथ विनयपूर्वक व्यवहार करना चाहिए। बेमतलब कटुता से कोई लाभ नहीं है। जो अपने साथ होना पसंद नहीं है वह दूसरे किसी के साथ कभी न किया जाए। उन्होंने आग्रह किया कि अपनी आदतन सोच को बदलना चाहिए। काम को बोझ की तरह न लेकर काम करने का भरपूर आनंद लेना चाहिए। बैंक में ऐसे जाना चाहिए मानो हम किसी मंदिर में जा रहे हैं। ऐसा समझें कि यूको बैंक एक लोन फैक्टरी है जहाँ ऋण के विविध उत्पाद बेचे जाते हैं और फिर यूकोजन ने बैंक के शेयर भी खरीदे हैं, अत: वे प्रत्यक्षत: बैंक के जोखिमधारक भी हैं। बैंक के हिताहित से अपने आपको सीधे-सीधे जोड़ लेने की जरूरत है। हमारी प्रगति ही बैंक की प्रगति है और बैंक की प्रगति ही हमारी प्रगति है।

एमडी महोदय ने दृढ़ता से कहा कि हमारा बैंक एक विराट “महायज्ञ” है जिसमें 44000 हाथों से आहुतियाँ डाली जा रही हैं। बैंक पर धन और वैभव की देवी लक्ष्मी की कृपा भी निरंतर बनी हुई है। उन्होंने कहा कि यदि बैंक एक कार हो, तो वे स्वयं इस कार का ड्राइवर हैं, जबकि यूकोजन कार में सवारी का स्थान रखते हैं। ड्राइवर का काम इस कार को सुरक्षित तरीके से ले जाना और गंतव्य पर पहुँचाना है, जबकि गंतव्य क्या होगा यह सवारियों को तय करना है। यूकोजन अपने परिवारों के हितों का सम्यक रूप से ध्यान रखें, स्वास्थ्य की सावधानियाँ भी रखें और इसके साथ ही बैंक की समृद्धि में अपना मुक्तहस्त योगदान करें, पसीना बहाएँ। प्रगति वहीं होती है जहाँ संकल्प के साथ श्रम किया जाता है। अच्छे भविष्य के लिए कष्ट उठाना तो बनता है! बैंक का भविष्य सुनहरा हो गया तो यूकोजन की उन्नति तो उसमें शामिल ही है।

राष्ट्रीय संस्कृति का
सात दिवसीय युवा अभियान

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन, कोलकाता द्वारा संचालित दिनांक 26 दिसंबर, 2021 से 01 जनवरी, 2022 तक 27वां हिंदी मेला के पुरस्कार वितरण समारोह में हिंदी मेला के अध्यक्ष **प्रो. शंभुनाथ,** निदेशक, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता के साथ अपने बैंक के कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास , श्री नरेश कुमार,** महाप्रबंधक- मानव संसाधन प्रबंधन एवं श्री अमलशेखर करणसेठ, मुख्य प्रबन्धक उपस्थित हुए।

हिंदी मेला के पुरस्कार वितरण समारोह में हिंदी मेला के अध्यक्ष **प्रो.शंभुनाथ,** निदेशक, भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता अपने बैंक के कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास** को सम्मानित करते हुए।

हिंदी मेला के **उद्घाटन** समारोह में सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन द्वारा अपने बैंक के **श्री नरेश कुमार,** महाप्रबंधक- मानव संसाधन प्रबंधन का सम्मान ।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

राष्ट्रीय संस्कृति का सात दिवसीय युवा अभियान

हिंदी मेला के समापन समारोह में बैंक के कार्यपालक निदेशक **श्री अजय व्यास** संबोधित करते हुए।

हिंदी मेला के समापन समारोह में बैंक के **श्री नरेश कुमार,** महाप्रबंधक- मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा संबोधित करते हुए।

सांस्कृतिक पुनर्निर्माण मिशन द्वारा संचालित एवं **यूको बैंक की प्रेरणा शक्ति** से **दिनांक 26 दिसंबर, 2021 से 01 जनवरी, 2022** तक **27वां हिंदी मेला** का आयोजन किया गया । कोलकाता का यह हिंदी मेला युवाओं, विद्यार्थियों और साहित्य-प्रेमियों का एक अनोखा सांस्कृतिक उत्सव है। इस मेले में लघु नाटक, काव्य आवृत्ति, हिंदी ज्ञान, काव्य संगीत, लोक गीत, काव्य नृत्य, रचनात्मक लेखन, कविता पोस्टर, आशु भाषण, वाद-विवाद प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। मेले का समापन एवं पुरस्कार समारोह **01 जनवरी, 2022** को भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता में किया गया जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में अपने बैंक के कार्यपालक निदेशक, **श्री अजय व्यास** उपस्थित थे। समारोह में **श्री नरेश कुमार,** महाप्रबंधक- मानव संसाधन प्रबंधन एवं राजभाषा तथा राजभाषा विभाग के प्रभारी एवं अन्य अधिकारी भी उपस्थित हुए।

खीरा के फायदे

खीरा एक ऐसा खाद्द पदार्थ है जो लगभग पूरे भारतवर्ष में पाया जाता है। खीरा शरीर को शीतलता और ताजगी प्रदान करता है। सलाद के रूप में सम्पूर्ण विश्व में खीरा का विशेष महत्त्व है। खीरा में विटामिन सी, विटामिन के, कॉपर, मैग्नीशियम, पोटेशियम, मैंगनीज और सबसे महत्वपूर्ण सिलिका जैसे आवश्यक पोषक तत्व **होते हैं**। खीरा को सलाद के अतिरिक्त उपवास के समय फलाहार के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसके द्वारा विभिन्न प्राकर की मिठाइयाँ भी तैयार की जाती है। गर्मियों में खीरा किसी न किसी रूप में जरूरी खाया जाता है। इस दौरान हल्का और साफ खाना जरूरी होता है क्योंकि सर्दियों के मुकाबले गर्मियों में डायरिया और फूड पॉइजनिंग की समस्या ज्यादा होती है। मगर खीरा के साथ में एक चेतावनी भी जुड़ी हुई है और वो यह है कि खीरा खाने के बाद पानी नहीं पीना चाहिए।

खीरे त्वचा और बालों के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है। इसमें 95 फीसदी पानी होता है ऐसे में इसे खाने के बाद पानी पीने से आप इन आवश्यक पोषक तत्वों से वंचित रह सकते हैं। पोषक तत्वों के बेहतर अवशोषण के लिए कच्ची सब्जियां और फल खाने के बाद पानी पीने से बचने की सलाह दी जाती है।

खीरा खाने के तुरंत बाद पानी पीने से जीआई गतिशीलता में वृद्धि होती है, जिससे पाचन और अवशोषण की प्राकृतिक प्रक्रिया को नुकसान पहुंचता है। खीरे के साथ या उसके बाद पानी पीने से शरीर का पीएच स्तर गड़बड़ हो सकता है। भोजन पचाने के लिए शरीर को पीएच स्तर की आवश्यकता होती है। बहुत अधिक पानी पीएच स्तर को कमजोर कर सकता है। इसके अलावा खीरे के ऊपर पानी पीने से खाद्य पदार्थों को पचाने के लिए आवश्यक एसिड प्रभावी ढंग से काम नहीं कर पाते, जिससे आपको पाचन से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं अगर आप पाचन और कब्ज जैसी समस्याओं से जूझ रहे हैं, तो आपके लिए उच्च पानी वाले खाद्य पदार्थ जैसे खीरा रामबाण साबित हो सकता है। यह आपकी आंतों को आराम पहुंचाएगा, लेकिन यदि आप खीरे के साथ पानी पीते हैं, तो आपको डायरिया और लूज मोशन जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है।

खीरा सलाद, रायता, सैंडविच के अलावा सूप में भी डाल सकते हैं। खीरे के पकौड़े भी खूब लजीज होते हैं। खीरे को पेय के रूप में भी इस्तमाल किया जा सकता है।

खीरा के फायदे

खीरे के अद्भुत फायदे | Amazing Health Benefits of Cucumbers | Acharya Balkrishna

खीरा सलाद, रायता, सैंडविच के अलावा सूप में भी डाल सकते हैं। खीरे के पकौड़े भी खूब लजीज होते हैं। खीरे को ड्रिंक्स में भी इस्तमाल किया जा सकता है। खीरा और उसके जूस में कई प्रकार के पोषक तत्व पाए जाते हैं, जो सेहत के लिए फायदेमंद साबित हो सकते हैं। वहीं, इस बात का ध्यान रखें कि यह किसी भी बीमारी का इलाज नहीं है, इसका उपयोग स्वास्थ्य समस्याओं से बचाव और उनके प्रभाव को कम करने में कुछ हद तक सहायक हो सकता है।

खीरे के जैसे ही खीर के जूस में कई प्रकार के विटामिन पाए जाते हैं। इसमें विटामिन सी, विटामिन बी 6, विटामिन ए, विटामिन ई और विटामिन के जैसे विटामिन शामिल हैं। इनमें विटामिन सी कॉग्नीटिव हानि (जिसमें याद करने, नई चीजें सीखने, ध्यान केंद्रित करने या निर्णय लेने में परेशानी होना शामिल है) और सेरेब्रोवास्कुलर रोग (मस्तिष्क में खून की कमी के कारण होने वाली मस्तिष्क की क्षति) से बचाव करने में मदद कर सकता है। खीरे के जूस का सेवन डिहाइड्रेशन यानी शरीर में पानी की कमी की समस्या में भी फायदेमंद हो सकता है। एक रिसर्च के अनुसार खीरे में लगभग 96 प्रतिशत तक पानी की मात्रा पाई जाती है। ऐसे में हम कह सकते हैं कि खीरे के जूस का सेवन शरीर को रिहाइड्रेट करने का काम कर सकता है।

पेट की गड़बडी तथा कब्ज में भी खीरा को औषधि के रूप में प्रयोग किया जाता है। खीरा में अधिक मात्रा में फाइबर मौजूद होता है जो कब्ज़ दूर करता है। पीलिया, प्यास, ज्वर, शरीर की जलन, गर्मी के सारे दोष, चर्म रोग में लाभदायक है। खीरे का रस पथरी में लाभदायक है। घुटनों में दर्द को दूर करने के लिये भोजन में खीरे का सेवन अधिक मात्रा में करें| खीरा और गर्मियां साथ-साथ आती हैं। खीरा में कई पोषक तत्व होते हैं, जो उसे सेहत के लिए जरूरी बना देते हैं। खीरा को मिनरल, विटामिन और इलेक्ट्रोलाइट्स का पावरहाउस कहा जाता है। यह सैंडविच, सलाद, रायता में सबसे खास पसंद होता है। अगर आप वजन कम करना चाहते हैं, तो खीरा आपका अच्छा साथी साबित हो सकता है। खीरे में 95 फीसदी पानी होता है, जो मेटबॉलिज्म मजबूत करता है। खीरे में ज्यादा पानी की मात्रा होने के चलते आप कई ऐसी चीजों के सेवन से बच जाते हैं जिसमें वजन बढ़ाने वाली चीजें ज्यादा होती हैं। हाल ही में हुए कई शोध इस बात को साबित कर रहे हैं कि रोजाना खीरा खाने से कैंसर का खतरा कम हो सकता है। खीरा में पाए जाने वाले प्रोटीन हमारे शरीर में कैंसर से लड़ने की ताकत पैदा करते हैं। यह कैंसर या ट्यूमर के विकास को रोकता है। इम्यूनिटी क्षमता को मजबूत बनाने में भी खीरा अहम है। खीरे में विटामिन सी, बीटा कैरोटीन जैसे एंटी ऑक्सीडेंट्स होते हैं, जो शरीर में मौजूद फ्री रेडिकल्स को दूर करते हैं।

खीरा अगर छिलके समेत खाया जाए तो यह हड्डियों को फायदा पहुंचाता है। खीरे के छिलके में काफी मात्रा में सिलिका होता है, जो हड्डियों को मजबूती देता है। साथ ही इसमें मौजूद कैल्शियम भी हड्डियों के स्वास्थ्य के लिए काफी कारगर साबित होता है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव

श्री अतुल कुमार गोयल, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी , यूको बैंक की 3 साल की सफलतापूर्वक समाप्ती पर विदाई एवं पंजाब नेशनल बैंक में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी के रूप में कार्यभार संभालने हेतु हार्दिक बधाई

आज़ादी का अमृत महोत्सव

प्रधान कार्यालय में अक्तूबर , नवंबर, दिसंबर , माह में सेवानिवृत्ति

श्री पवन सिंह, उप महाप्रबंधक, सामान्य प्रशासन विभाग , प्रधान कार्यालय को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए स्टाफ सदस्यगण

श्री गोपाल चंद्र पासवान, विशेष सहायक, सतर्कता विभाग , प्रधान कार्यालय को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए स्टाफ सदस्यगण

श्री आशीष कुमार घोष, एसडब्ल्यूओए, सामान्य प्रशासन विभाग , प्रधान कार्यालय को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावभीनी विदाई देते हुए स्टाफ सदस्यगण

विदाई

अंचलों में अक्टूबर, नवंबर एवं दिसंबर माह में सेवानिवृत्त

श्री प्रशांत कुमार विश्वास(मुख्य खजांची), कार्मिक सं.35572, झांटीपाहाड़ी शाखा, दुर्गापुर अंचल को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावपूर्ण विदाई देते हुए शाखा के स्टाफ सदस्यगण

श्री बालाजी चरण परिड़ा, अधीनस्थ स्टाफ , कार्मिक सं., विद्याधरपुर, बालेश्वरअंचल को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावपूर्ण विदाई देते हुए शाखा के स्टाफ सदस्यगण

श्री प्रवीर कुमार साहा , वरिष्ठ प्रबन्धक, कर्मचारी सं. 38039, दुर्गापुर मुख्य शाखा, वर्धमान अंचल को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावपूर्ण विदाई देते हुए शाखा के स्टाफ सदस्यगण

सभी प्रिय यूकोजन साथियों को स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं

विदाई

अंचलों में अक्टूबर, नवंबर एवं दिसंबर माह में सेवानिवृत्त

श्री पंचानन कीस्कु (सहायक प्रबन्धक) , **कार्मिक** सं.38296, **झांटीपाहाड़ी शाखा, दुर्गापुर अंचल** को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावपूर्ण विदाई देते हुए शाखा के स्टाफ सदस्यगण

श्री भारत चंद्र दास(एसडब्ल्यूओ-ए) , **कार्मिक** सं.42014, **मांतेशवर शाखा, दुर्गापुर अंचल** को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावपूर्ण विदाई देते हुए शाखा के स्टाफ सदस्यगण

श्री दिपंकर मुखर्जी, विशेष सहायक एवं **श्री सुशीम कुमार गुहा**, अधिनस्थ , कटहल **बगान शाखा, हुगली अंचल** को सेवानिवृत्ति के अवसर पर भावपूर्ण विदाई देते हुए शाखा के स्टाफ सदस्यगण

सभी प्रिय यूकोजन साथियों को स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन की शुभकामनाएं

साधु का इंटरव्यू

एक साधु का न्यूयार्क में बड़े पत्रकार इंटरव्यू ले रहे थे। पत्रकार- “सर, आपने अपने लास्ट लेक्चर में संपर्क (Contact) और संजोग (Connection) पर स्पीच दिया लेकिन यह बहुत कन्फ्यूज करने वाला था। क्या आप इसे समझा सकते हैं ?”

साधु मुस्कराये और उन्होंने कुछ अलग... पत्रकारों से ही पूछना शुरू कर दिया। "आप न्यूयॉर्क से हैं?"

पत्रकार: "Yeah..." सन्यासी: "आपके घर में कौन कौन हैं?" पत्रकार को लगा कि.. साधु उनका सवाल टालने की कोशिश कर रहे हैं क्योंकि उनका सवाल बहुत व्यक्तिगत और उसके सवाल के जवाब से अलग था। फिर भी पत्रकार बोला : "मेरी माँ अब नही हैं, पिता हैं तथा 3 भाई और एक बहिन हैं ! सब शादीशुदा हैं "

साधू ने चेहरे पे एक मुस्कान के साथ पूछा: "आप अपने पिता से बात करते हैं?"

पत्रकार चेहरे से गुस्से में लगने लगा...

साधू ने पूछा, "आपने अपने फादर से last कब बात की?"

पत्रकार ने अपना गुस्सा दबाते हुए जवाब दिया : "शायद एक महीने पहले" साधू ने पूछा: "क्या आप भाई-बहन अक़्सर मिलते हैं, आप सब आखिर में कब मिले एक परिवार की तरह ?” इस सवाल पर पत्रकार के माथे पर पसीना आ गया कि इंटरव्यू मैं ले रहा हूँ या ये साधु ? ऐसा लगा साधु, पत्रकार का इंटरव्यू ले रहा है? एक आह के साथ पत्रकार बोला : "क्रिसमस पर 2 साल पहले।"

साधू ने पूछा: "कितने दिन आप सब साथ में रहे ?" पत्रकार अपनी आँखों से निकले आँसुओं को पोंछते हुए बोला : "3 दिन..." साधु: "कितना वक्त आप भाई बहनों ने अपने पिता के बिल्कुल करीब बैठ कर गुजारा ?

पत्रकार हैरान और शर्मिंदा दिखा और एक कागज़ पर कुछ लिखने लगा...

साधु का इंटरव्यू

प्रेरक प्रसंग

साधु ने पूछा: " क्या आपने पिता के साथ नाश्ता, लंच या डिनर लिया ? क्या आपने अपने पिता से पूछा के वो कैसे हैँ? माता की मृत्यु के बाद उनका वक्त कैसे गुज़र रहा है..... !

साधु ने पत्रकार का हाथ पकड़ा और कहा: "शर्मिंदा, या दुखी मत होना। मुझे खेद है अगर मैंने आपको अनजाने में चोट पहुंचाई हो, लेकिन ये ही आपके सवाल का जवाब है । "संपर्क और संजोग" (Contact and Connection) आप अपने पिता के सिर्फ संपर्क (Contact) में हैं, पर आपका उनसे कोई जुड़ाव(Connection) नहीं है। You are not connected to him। आप अपने father से संपर्क में हैं, जुड़े नहीं है। Connection हमेशा आत्मा से आत्मा का होता है। heart से heart होता है। एक साथ बैठना, भोजन साझा करना और एक दूसरे की देखभाल करना, स्पर्श करना, हाथ मिलाना, आँखों का संपर्क होना, कुछ समय एक साथ बिताना आप अपने पिता, भाई और बहनों के संपर्क ('Contact') में हैं लेकिन आपका आपस मे कोई जुड़ाव (Connection) नहीं है।"

पत्रकार ने आंखें पोंछी और बोला: "मुझे एक अच्छा और अविस्मरणीय सबक सिखाने के लिए धन्यवाद।"
आज ये भारत की भी सच्चाई हो चली है। सबके हज़ारो संपर्क (contacts) हैं पर कोई जुड़ाव(connection) नहीं। कोई विचार-विमर्श नहीं। हर आदमी अपनी नकली दुनिया में खोया हुआ है। वो साधु और कोई नहीं **स्वामी विवेकानंद** थे।

"यूको मासिकी, यूको संगम, यूको टावर एवं अनुगूँज" में प्रकाशनार्थ सामग्री आमंत्रित है"

सभी यूकोजनों से अनुरोध है कि "यूको मासिकी, यूको संगम, यूको टावर एवं अनुगूँज" के आगामी अंक के लिए सामग्री हमें प्रेषित करें। यह सामग्री शाखा/कार्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियों/कार्यक्रमों/बैठकों आदि के फोटोग्राफ एवं एक संक्षिप्त रिपोर्ट, ज्ञानवर्धक लेख, बैंक के उत्पाद एवं सरकारी योजनाओं से संबंधित लेख, ग्राहक एवं स्टाफ की सफलता की कहानी, शाखा की सफलता की कहानी आदि के रूप में भेज सकते हैं।

पाठकगण प्रकाशनार्थ सामग्री अपने व्यक्तिगत विवरण एवं एक पासपोर्ट आकार की फोटो के साथ राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय के ई-मेल horajbhasha.calcutta@ucobank.co.in पर प्रेषित करें।

भारत सरकार के इलेक्ट्रौनिकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय द्वारा वर्ष 2020-21 के लिए सर्वाधिक डिजिटल लेनेडेन प्रतिशत के लिए यूको बैंक को प्रथम स्थान – उत्कर्ष पुरस्कार प्रदान किया गया